॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मई, 2014 वर्ष 17, अंक 5
विक्रमी सम्वत् 2071
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

❑ डॉ. धर्मवीर सेठी

यजुर्वेद के 34वें अध्याय की प्रथम छः ऋचाओं में ऋषि ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है-मेरा मन कैसा हो? प्रत्येक ऋचा के अन्तिम शब्द हैं: 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'-तत् (वह) मे (मेरा) मनः (मन) शिव (कल्याणकारी) संकल्प (इरादे वाला) अस्तु (हो) अर्थात् मेरे मन में (चाहे वह जैसा भी हो) सदा कल्याणकारी विचार ही उठें। कितनी उदात्त भावना है।

परन्तु प्रश्न उठता है कि आखिर मन है क्या जिसके सम्बन्ध में कवियों, साहित्यकारों और मनीषियों ने बहुत कुछ लिपिबद्ध किया है और जिससे सम्बन्धित अनेकों मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी प्रसिद्ध हैं।

मन मानव शरीर का दिखाई पड़ने वाला कोई अंग नहीं। बाह्य अंगों को छोड़ शरीर के अन्दर का हृदय (Heart), मस्तिष्क (Brain), गुर्दे (Kidney) और अनेको नाड़ियाँ (Veins) जिन्हें डॉक्टर देख और दिखा सकते हैं, उनमें मन की स्थिति, इस रूप में, कहीं भी नहीं है। या यूँ कहें मन निराकार है। फिर भी मन इतना शक्तिशाली है कि **''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''**। कुछ विद्वानों ने मन को **'अन्तःकरण चतुष्टय'** में से एक माना है।

श्रीमद्भगवत्गीता में अर्जुन मन को चंचल बताते हुए श्री कृष्ण को कहता है: **चंचलं हि मनः कृष्ण, प्रमाथि बलवद्दृढ़म।**

तस्याहं निग्रहं मन्ये, वायोरिव सुदुष्करम्॥ गीता-6/34

मन को काबू करना तो वैसे ही कठिन है जैसे वायु को वश में करना। मन ही बन्धन का कारण और मोक्ष का साधन है। मित्र और शत्रु भी मन ही है। उत्थान-पतन, सुख-दुःख सब इसी की देन हैं। मानव को दानव और दानव को मानव भी यही बनाता है। समस्त मानसिक रोगों का कारण भी यह मन ही है। मन की खुराक है विचार। देखा गया है कि मन में प्रायः नकारात्मक विचार ही अधिक उठते हैं या यूँ कहें कि यह पंच विकारों-काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ईर्ष्या-द्वेष को अधिक प्रश्न देता है। और सकारात्मक विचार अन्तस् में लाना भी मन पर ही निर्भर करता है।

श्री कृष्ण ने तो अर्जुन की इस शंका (मन की चंचलता) का समाधा करने अथवा उसको रोकने के दो सूत्र बताए हैं। अभ्यास और वैराग्य। भटकते मन को अन्तर्मुखी बनाने के लिए अभ्यास की नितान्त आवश्यकता है-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥ गीता-6/35

हे अर्जुन! मनुष्य का मन निश्चय ही चंचल है और कठिनाई से काबू में आने वाला है किन्तु अभ्यास और वैराग्य के द्वारा उसे वश में किया जा सकता है। योग दर्शन में पतंजलि ने भी स्पष्ट कहा है ''अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः'' (अभ्यास और वैराग्य से मन का निरोध होता है अर्थात् मन काबू में आ सकता है।) इस सम्बन्ध में एक दोहा अत्यन्त प्रचलित है:

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान॥

वैराग्य के सूत्र को स्पष्ट करते हुए श्री कृष्ण ने कहा, मोह अन्ततः दुःख का कारण है। संसार की सच्चाई को जानें कि यहाँ कुछ भी स्थाई नहीं है। यह संसार का सराय है। इसलिए निर्लिप्तता ही मन को भटकने से बचाएगी और वैराग्य ज्ञान से उत्पन्न होता है। सत्संग, स्वाध्याय, साधना, भक्ति-प्रार्थना, सन्तोष आदि उपायों से ही वैराग्य की स्थिति प्राप्त की जा सकती है। इससे कर्त्तव्य-बोध होगा, सत-पथ पर चलने की प्रेरणा मिलेगी। यजुर्वेद 34/1 में मन की गतिशीलता की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि दिन हो या रात, मनुष्य जाग रहा हो अथवा सुप्तावस्था में हो, मन की उड़ान प्रकाश की एक किरण के समान इतनी तीव्र होती है जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। मन को 'वेगवान' संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है। इसकी गति अतुलनीय है। फिर भी इस प्रकार वाला मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो, यही प्रार्थना है।

दूसरी ऋचा में मन के सकारात्मक रूप की चर्चा करते हुए कहा गया है कि जिस मन से सत्कर्मनिष्ठ, मन को दमन करने वाले बुद्धिमान लोग यज्ञादि साधनों से और वैज्ञानिक युद्धादि व्यवहारों से इष्ट कर्म करते हैं और जो मन प्रभु की अद्भुत रचना प्राणिमात्र के अन्दर (विचार रूप में) स्थित है, वह मेरा मन उत्तम संकल्प करने वाला बने। यहाँ मन को शरीर का एक दृश्य अंग नहीं अपितुः 'The common centre of all the senses' के रूप में देखा गया है।

वेद का ऋषि कभी भी निराश नहीं (शेष पृष्ठ 22 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

"ईश्वर के अस्तित्व को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता"

- डॉ. अशोक कुमार चौहान

मंच से अपना उद्बोधन देते डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक एमेटी शिक्षण संस्थान एवम् ए.के.सी. ग्रुप ऑफ कम्पनीज्) साथ में वैदिक विद्वान श्री विनय वेदालंकार एवम् डॉ. वागिश आचार्य जी। द्वितीय चित्र में डॉ. चौहान एवम् कुलपति डॉ. शशि प्रभा कुमार एवम् आनन्द चौहान (डायरेक्टर एमेटी शिक्षण संस्थान एवम् ए.के.सी. ग्रुप ऑफ कम्पनीज्)

आस्तिक सुधी जनों के लिए यह हर्ष का विषय है कि विभिन्न मतों के विद्वानों एवं समाज विज्ञानियों ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि ईश्वर का अस्तित्व है, इस सत्य तथ्य पर कोई मतभेद नहीं है। हाँ, 'वह कैसा है व क्या-क्या करता है', यह विवाद व चर्चा का विषय हो सकता है ये विचार "ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं?" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी के मुख्य अतिथि एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा के संस्थापक व कुलाधिपति डॉ. अशोक चौहान ने व्यक्त किए।

यह एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिल्ली की 34 शैक्षणिक, सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के तत्त्वाधान में "ईश्वर है या नहीं" विषय पर दिनांक 13 अप्रैल 2014 को 'आर्य ऑडिटोरियम ईस्ट ऑफ कैलाश' में आयोजित की गई। इस विचारोत्तेजक गोष्ठी का प्रारम्भ वेदमन्त्रों के उच्चारण व दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। गोष्ठी की अध्यक्षता साँची विश्वविद्यालय (म.प्र.) की नवनियुक्त कुलपति डॉ. शशि प्रभा कुमार ने की। गोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए गोष्ठी के मुख्य संचालक डॉ. विनय विद्यालंकार (अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल) ने विषय प्रवर्त्तन करते हुए कहा कि यह गोष्ठी ईश्वरवादी दार्शनिक चिन्तकों, अनीश्वरवादी दार्शनिक विचारधाराओं एवं विज्ञान के पक्ष को खुले रूप में एक साथ मंच पर प्रस्तुत करने के लिए आयोजित की गयी है। इसमें सौहार्दपूर्ण वातावरण में अपना पक्ष रखने के लिए जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, वैदिक चिन्तन एवं विज्ञान का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए विद्वानों को आमंत्रित किया गया। गोष्ठी में सर्वप्रथम बौद्ध दर्शन का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के पूर्व अध्यक्ष एवं दिल्ली विश्वविद्यालय दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एस.आर. भट्ट ने कहा कि बौद्ध दर्शन को नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखना उचित नहीं है। इस दर्शन के अनुसार, ईश्वर की अवधारणा को केवल अनुभूति का विषय माना गया है, परन्तु उसे तर्क-वितर्क से सिद्ध करना ठीक नहीं।

जैन दर्शन का पक्ष रखते हुए श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के जैन दर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. वीर सागर जैन ने भी जैन दर्शन को आस्तिक दर्शन की श्रेणी में रखने की पुरजोर वकालत की। उन्होंने कहा कि जैन धर्म के तीर्थकर एवं आचार्य ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं, परन्तु उसे सृष्टिकर्ता व कर्मफल-प्रदाता स्वीकार नहीं करते, उनके अनुसार वह ईश्वर को हमारे कर्मो का दृष्टा

(शेष पृष्ठ 21 पर)

टंकारा कि सुर में सुर मिलाने पूनम सूरी आया

आज टंकारा की जमीं पर
दयानन्द का अक्ष उतर आया है।
सितारों की इस महफिल में
पूनम का चाँद नजर आया है।
दिल में वैदिक धर्म का तूफान
लबों पर लेकर नाम दयानन्द का
कर्मक्षेत्र में देखो उसने
आर्यसमाज का सत्संग रचाया है।
ले चरण रज दयानन्द की,
मस्तक अपना बारम्बार नवाया है,
अपनी इसी अदा से उसने
आशा का दीप जलाया है।

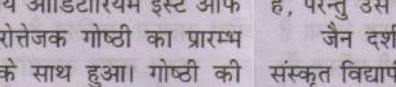

धन्य धन्य है ये धरा दयानन्द स्वामी,
तेरी एक बार फिर
कि तेरे सुर में सुर मिलाने
पूनम सूरी आया है।
हे प्रभु! दिल को उसके इतना रोशन कर दे,
नई उमंग और नवशक्ति से भर दे।
दिल के अज्ञान और अन्धकार दूर कर दे,
क्योंकि भरोसा आर्यो का लेकर इसने,
डी.ए.वी. को दयानन्द के सपनों से सजाया है।
विद्यार्थी कहे ओ३म् की साधना करके
इसी ने आनन्द पद पाया है।

- डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी
क्षेत्रीय निदेशक, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पानीपत जॉन

आप कौन सी श्रेणी में है?

मनुष्य ने हर क्षेत्र में काफी उन्नति कर ली है। चिकित्सा का क्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो, नभ-तल के रहस्यों की जानने का क्षेत्र हो, सभी जगह मनुष्य ने अपनी विजयी उपस्थिति दर्ज की है। आज चिकित्सा के क्षेत्र में हुये अविष्कारों से मनुष्य ने अपनी आयु तक को बड़ा लिया है। पानी के ऊपर के जहाज तो बनाये ही अब पानी के नीचे भी चलने वाले जहाज भी बना लिएं। हवा में उड़ने वाले जहाज तो अब पुरानी बात हो गई, इन सभी क्षेत्रों में मनुष्य की खोज अभूतपूर्व है परन्तु मनुष्य अभी तक मनुष्य ही नहीं बन पाया, डाक्टर बन गया, वैज्ञानिक बन गया, अध्यापक बन गया, राजनेता बन गया, अभिनेता बन गया पर क्या मनुष्य बना विचारे। इस पृथ्वी पर जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिए यह अभी तक हम नहीं सीख पाए।

जीवन का उद्देश्य क्या है? इसके बारे में तीन विचारधाराएं हैं। कुछ लोगों का तो जीवन के सम्बन्ध में यह विचार है कि यह संसार जीव के लिए हितार्थ ही बनाया गया है अत: जीवन का उद्देश्य है, Eat drink and be merry खाओ पीवो और मौज उड़ाओ। यह संसार नाचने गाने हँसने और मजे करने के लिए बना हुआ है। ऐसे लोगों की धारणा है कि भाड़ में जाए अच्छाई-बुराई। यारों को तो अपने हल्वे मांडे से काम है। कोई मरे कोई जीवे, हमे बतासे खाने से मतलब है। वही वह लोग हैं जिनका मत है-यावत जीवेत सुखम्, जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतम् पिवेत् भस्मी भूतस्य देहस्य पुनर्गमनं कुत:, जब तक जीवो खूब सुख से जीओ, खूब घी पीओ, यदि पास न हो तो उधार लेकर पीओ, जब यह शरीर जल कर राख हो जाएगा तो फिर किसे वापस आना है, जिस तरह बन पड़े आनन्द करो। सृष्टि की आयु करोड़ों अरबों वर्षों की है, उसके सामने हमारी साठ उत्तर वर्ष की आयु की तुलना ही क्या। अत: इस पर विचार करना, उस पर चिन्ता करना, अपना समय व्यर्थ में नष्ट करना है, सरासर भूल और पागलपन है। इस प्रकार के लोगों की संख्या अधिक है। इस समुदाय की तुलना बढ़ई के बसूले से की जा सकती है। जिन लोगों ने बढ़ई को बसूले से कार्य करते देखा है, वह जानते हैं कि उसके द्वारा बढ़ई लकड़ी का छीलन सारे का सारा अपनी ओर डालता है, ठीक इसी प्रकार इस प्रकार के लोग अपना पेट भरने में मस्त व व्यस्त रहते हैं। दुनिया जाए भाड़ में उनको अपनी ही चिन्ता है, इन लोगों का उद्देश्य यही रहता है- तुझे पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू।

दूसरे ढंग का समुदाय वह है जिसकी तुलना बढ़ई के रन्दे से की जा सकती है। बढ़ई का रन्दा जब चलता है तो लकड़ी का छिलका सबका सब दूसरी ओर फेंकता है, अपनी ओर नहीं डालता। ये वे लोग हैं जो सारी दुनिया को धोखा मानती हैं। सारी सृष्टि को खोखला मानते हैं। ऐसे लोग छोटी-छोटी बुराइयों को छोड़ने की अपेक्षा बुराई के उस स्त्रोत को ही छोड़ना उचित समझते हैं और प्रचार करते हैं और प्रचार करते हैं। वह दुनिया से मुँह मोड़ कर त्यागी बन जाते हैं और इसी में अपना कल्याण समझते हैं। संसार के सारे सुखों को जगत के सब पदार्थों को दूसरों के हवाले करके अपने आप दुनिया से अलग-थलग होने में ही अपनी भलाई मानते हैं। इनको दुनिया के सुख व दुख से कोई सरोकार नहीं, वे केवल अपना अगला जन्म सुधारने में ही अपने कर्तव्य को पूरा करना समझते हैं।

तीसरा समुदाय वह है जिसे बढ़ई का आरा जब चलता है तो लकड़ी का बुरादा आगे तरफ भी फेंकता है और पीछे की ओर भी।

इस समुदाय से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों की यही विशेषता है कि वह अपना भला चाहते हैं, परन्तु दूसरों का भला करके। ऐसे लोग प्रात: काल उठते ही प्रभु से याचना करते हैं-

हे ईश! सब सुखी हों, कोई दु:खी न हो, सभी भद्र भाव से देखें, सभी सन्मार्ग के पथिक हों, सबका भला करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण और कहने की आवश्यकता नहीं कि सब के कल्याण में ही हमारा कल्याण है। जब हम सब का शब्द प्रयोग करते हैं तो सब में हम स्वत: ही सम्मिलित हो जाते हैं। अन्तत: हम भी तो सबमें से एक हैं। आपाधापी का जीवन भी कोई जीवन है? व्यक्तिगत रूप से सुखी बन कर कोई स्थायी सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता। साधारणतया जो व्यक्ति संसार में पदार्पण करते हैं, उनके जीवन का लक्ष्य उपरोक्त तीन में से किसी न किसी एक समुदाय से सम्बन्धित होता है। हममें प्रत्येक को अपने बारे में सोचना चाहिए कि हमारा सम्बन्ध किस श्रेणी के साथ है।

इन तीन श्रेणियों के अतिरिक्त एक और अधम श्रेणी भी है। वह उन व्यक्तियों की है जिनका मन्तव्य है कि न खेलेंगे न खेलने देंगे। अपना भला भी न करेंगे, दूसरों का भी न चाहेंगे। न अपना जीवन सुखी बनाएंगे, न ही दूसरों के लिए सुख का साधन उपस्थित करेंगे। पड़ौसी की दीवार अवश्य गिरवाएंगे चाहे ऐसा करने से उनका अपना मकान ही क्यों न गिर जाए। ऐसे व्यक्ति पिशाचवृत्ति के होते हैं। चार श्रेणियों का दिग्दर्शन का अभिप्राय आपका ध्यान इस ओर दिलाना है कि हम अपने जीवन के सम्बन्ध में सोचें, विचारें और देखें कि कौन सी श्रेणी में हमारी गिनती होती है।

केवल अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहने वाला व्यक्ति मनुष्य नहीं कहला सकता। सारे भूण्डल को आर्य श्रेष्ठ और सुखी बनाने वाला व्यक्ति ही आर्य अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाता है। जिसके अन्दर दूसरों के प्रति सहानुभूति नहीं या जो केवल अपने लिए जीता है जिसका जीवन उद्देश्य केवल अपना ही भला करना है। ऐसे व्यक्ति में और पशु में अन्तर ही क्या है?

अजय टंकारावाला

टंकारामां राष्ट्रीय स्तरनो आर्य वीरांगना दल शिबिर

મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ ટંકારાના સહયોગથી ટંકારામાં ગુજ. પ્રા. આ. પ્ર. સભાએ રાષ્ટ્રીય સ્તરના આર્ય વીરાંગના દલ શિબિરનું આયોજન ૦૧થી ૦૮મી જુન ૨૦૧૪ દરમ્યાન કર્યું છે. શિબિરમાં રાષ્ટ્રીય સ્તરના પ્રશિક્ષકો મહિલાઓને શારીરિક અને બૌદ્ધિક પ્રશિક્ષણ આપશે. વધારે જાણકારી માટે સમ્પર્ક કરો:-

શ્રી હસમુખભાઈ પરમાર – મન્ત્રી, ગુજ. પ્રા. આ. પ્ર. સભા. મોબાઈલ નં. ૯૮૭૯૩૩૩૩૪૮

युग पुरुष स्वामी दयानन्द कौन थे?

❒ कन्हैयालाल आर्य

"मैं सादर प्रणाम करता हूँ? उस महागुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्म गाथा में सत्य और एकता का बीज देखा। जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगो को प्रदीप्त कर दिया। जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता के जागृति लोक में लाना था। उस गुरु को मेरा बारम्बार प्रणाम है।" ये ज्वलन्त शब्द विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा अभिव्यक्त अपने एक ऋषि कल्प युग पुरुष के प्रति अर्पित नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक है।

वास्तव में महर्षि दयानन्द हमारी आत्मा के बन्धनों को काटने आये थे। महर्षि दयानन्द का हमारे इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। उन्होंने हिन्दू धर्म को मध्य युग की धार्मिक कूपमण्डूकता और पुरोहित तन्त्र के चंगुल से छुटकारा दिलाने का सबसे सबल प्रयास किया था। अन्ध विश्वास, महन्त, मठाधीश एवं पण्डे पुजारी के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को एक नया प्रकाश देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का सबल प्रयास किया था।

जैसे चमकने वालों में सूर्य, हाथियों में ऐरावत, भौतिक पदार्थों में रत्न वीरों में जामदग्न्य, आर्दश पुरुषों में राम, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में कृष्ण तथा शीतल तत्वों में चन्द्रमा को निराला माना जाता है। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी एक निराला व्यक्ति है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन काल में सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके तत्कालीन समाज की स्थिति को देखा तो पाया कि लोग बहुदेवतावाद, जड़ पूजा, छुआछूत, बाल-विवाह, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, जादू टोना, पशु बलि, मद्य, मांसाहार आदि अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रस्त है। ईश्वर के नाम पर अनेकों स्वयंभू ईश्वर बनकर जनता को पतन की ओर ले जा रहे थे। भारतीय समाज की जीवन परम्परा ईश्वरोक्त वैदिक धर्म से लगभग भिन्न हो चुकी है। लोग वेद, दर्शन, उपनिषद आदि आर्ष ग्रन्थों में वर्णित सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, निराकर ईश्वर से भिन्न कपोल कल्पित मिथ्या देवी, देवताओं की पूजा कर रहे है। स्त्री जाति पर भारी अत्याचार हो रहे है। स्त्री और शूद को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है। नारी ही नरक का द्वार है ऐसी अवैदिक मान्यताओं को समाज में प्रचारित कर समाज को पीड़ित किया हुआ है। बाल विवाह, बहु विवाह एवं विधवाओं पर अत्याचारों से समाज में हाहाकार मच रहा था।

ऐसे अन्धकार के समय परमेश्वर की अपार कृपा से युग पुरुष ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने अवैदिक मिथ्या मान्यताओं के प्रचलन से समाज और राष्ट्र में होने वाली अनेक प्रकार की हानियों तथा कुपरिणामों को देखकर समाज में पुनः विशुद्ध वैदिक मान्यताओं की स्थापना करने का मन में दृढ़ संकल्प किया। विश्व को ईश्वर के सत्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराया ओर उद्घोष किया कि एक ईश्वर के पुत्र होने के नाते हम सब भाई है। महर्षि का स्वप्न था कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दु:ख और अशान्ति से छूट कर सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त करें। मानव को मानव से अलग करने वाली साम्प्रदायिक दीवारों को वे समाप्त करना चाहते थे।

मेरा प्यारा दयानन्द सब बातों में निराला था। गुरु बना, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपतराय तथा श्याम कृष्ण वर्मा जैसे अनूठे शिष्य उत्पन्न किए। जिन्होंने राष्ट्र और समाज की अनथक सेवा की। शिष्य बने और ऐसे समर्पित कि गुरु को कहना पड़ा "दयानन्द! मुझे आप का जीवन चाहिए। राष्ट्र एवं समाज हित में तुम्हारे जीवन की आहूति चाहता हूँ।" गुरु ने इस पवित्र वाक्य को जीवन का आदर्श मानकर आजीवन निभाया। गुरुडम् नहीं चलाया। सन्तत्व में, त्याग में, तपस्या में, वैराग्य में, योगियों में, समाज सुधारकों में, वेद भाष्यकारों में, ब्रह्मचारियों में, युग प्रवर्तकाओं में, जीने वालों में आप का निरालापन समाज को प्रेरणा देता रहा है।

महर्षि दयानन्द के उपकारों को गिना तो नहीं जा सकता। परन्तु उनके मुख्य कार्यो में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की स्थापना, यज्ञ प्रणाली को पुर्नस्थापित करना, वेद प्रचार, स्वराज्य के पुनरूद्धारक, गोरक्षक, अछूतों के सच्चे सुधारक, हिन्दी भाषा के सच्चे हितैषी, अनाथों के रक्षक एवं सार्वभौमिक धर्म के प्रचारक के रूप में आपके योगदान को पूरा विश्व जानता है। परन्तु स्त्री जाति के प्रति आपके किए गए उपकारों को भुलाना तो कृतघ्नता होगी। महर्षि के प्रचार कार्य से पूर्व स्त्री जाति को पांव की जूती माना जाता था। यदि वह विधवा हो जाती थी उसे आयुपर्यन्त ठण्डे सांस भर के जीवन व्यतीत करना पड़ता था। "ढोल, गवांर, शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी कह कर नारी को अपमानित किया जाता था। ऋषि दयानन्द जी ने महर्षि मनु के कथनानुसार "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता", जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते है कि घोषणा करके नारी जाति पर बड़े उपकार किए। कन्याओं की छोटी आयु में विवाह कर दिये जाते थे। बूढ़ो के साथ विवाह कर उन्हें विधवा बनाकर समाज में अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश किया जाता था। बाल विवाह का विरोध कर युवावस्था में विवाह का प्रचार किया। कन्याओं की शिक्षा पर बल दिया, उन्हें घूंघट एवं पर्दे से बाहर निकाला। आज ईश्वर कृपा से नारियाँ मजिस्ट्रेट, डाक्टर, वकील, अध्यापिका, प्रशासनिक अधिकारी, मन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तक बन रही है। स्वामी जी के उपकारों को स्त्री जाति कभी भी नहीं भुला सकती।

आज केवल भारत ही नहीं, सारे धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक संसार पर महर्षि दयानन्द का सिक्का है। विभिन्न मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल दिये है। धर्मपुस्तकों के अर्थो का संशोधन किया है। दलितोद्धार का प्राण, समाज सुधार की जान, आदर्श सुधारक शिक्षा प्रचारक, वैदिक मान्यताओं का पुर्नस्थापक, स्त्री जाति का सच्चा हितैषी, गौमाता का सच्चा रक्षक, करूणा निधि दयानन्द के जीवन से हम प्रेरणा लें।

आओ! हम अपने आपको ऋषि दयानन्द के रंग में रंगे। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्ठा हो तभी हम एक स्वर से पुकार सकेगें।

पापों और पाखण्डो से ऋषिराज छुड़ाया था तूने।
भयभीत निराक्षित जाति को निर्भीक बनाया था तूने।
बलिदान तेरा था अद्वितीय हो गई दिशायें गुञ्जित थी।
जन जन को देगा प्रकाश वह दीप जलाया था तूने।

अन्त में यह निवेदन करना चाहता हूँ आर्यो! उठो! जागो! अपने को सम्भालो। अपने स्वरूप को देखो। जिन उद्देशों के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज रूपी पवित्र संगठन को खड़ा किया था, उनकी पूर्ति के लिए व्रती तथा संकल्पी बनो। संसार हमारी ओर देख रहा है। वैचारिक चिन्तन आर्य समाज की सबसे बड़ी सम्पदा है। हम लोग बड़े भाग्यशाली है कि हमें ऋषि दयानन्द जैसा पुण्यात्मा, प्रभुभक्त, सत्यज्ञान का प्रेरक मार्गदर्शक मिला है।

- 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा, मो. 09911197073

आर्य कौन, इतिहास कैसे बिगड़ा और कैसे संवरा ?

❑ श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

जो ज्ञानी, तपस्वी, सन्तोषी, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दाता, दयालु और नम्र है वही विशुद्ध आर्य है। उसका संस्कार सर्वोत्तम है। यह आर्यों का समाज वैदिक काल से चला आ रहा था। उस समय ऋषिगण ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'' (ऋग्वेद) का देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में प्रचार किया करते थे। ऋषियों की वैदिक भाषा और वैदिक ज्ञान तथा सभ्यता, शिक्षा का संस्कार, महाभारत काल के पूर्व तक दिया जाता रहा। (उदाहरण के लिए भौतिक विज्ञान के अलावा योग-यज्ञादि का कर्मकाण्ड विधिपूर्वक किया जाता रहा। पर महाभारत काल से ही नैतिकता का पतन होने लगा था। श्री कृष्ण की अनुपस्थित में जुवा होने के कारण कौरव-पाण्डवों में दुश्मनी हो गई। वेदों की अपवृत्ति होने लगी। जब श्री कृष्ण इन्द्रप्रस्थ पहुंचे तो द्रोपदी की बात सुनकर बोले कि यदि हम रहते तो यह जुवा नहीं होने देते। किन्तु होनी को कौन टाल सकता है। विनाश काले विपरीत बुद्धि, अन्त में महाभारत युद्ध हुआ। आज से लगभग 5 पांच हजार वर्ष पूर्व/योगेश्वर श्रीकृष्ण के वृहद् प्रयासों के उपरान्त भी महाभारत युद्ध नहीं टल सका। अवैदिक आचरण अपनी चरम सीमा पर पहुंच गये थे। उसकी ही परिणिति महाभारत युद्ध हुआ/अनेक देश के राजे महाराजे इस भयंकर युद्ध में सम्मिलित हो गये थे। इसमें संसार के प्राय: बलवान, गुणवान, योद्धा, बुद्धिमान, शूरवीर, सारथी, महारथी, अपने लोभ, मोह, लालच तथा स्वार्थपरता के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। इस युद्ध में वैदिक ऋषि तथा आर्य विद्वान भी नहीं रहे।

कुछ काल के पश्चात अल्पविद्या भयंकरी की युक्ति चरितार्थ हुई। जो अल्पज्ञानी बचे, उन्होंने स्वच्छा से कार्य प्रारम्भ कर दी। वेद ज्ञान से रहित लोगों ने उन मन गढ़न्त धारणाओं एवं भ्रष्टतम मान्यताओं को शिरोधार्य किया। अनाचार उत्तरोत्तर बढ़ता गया, मध्यकालीन इतिहासावलोन से ज्ञात होता है कि सनातन धर्म कभी नहीं रहा। इस प्रकार अनार्यता सारे संसार में फैल गई। सभी देश वेदज्ञ के अभाव में अवैदिक प्रथा का प्रचलन होने लगा और अल्प ब्राह्मणों द्वारा वेदों के अनर्थ को सही मानकर सब अपने अपने शक्ति के उपासक शाक्त तथा शिव के पूजक शैव एवं विष्णु के आराधक वैष्णव मत का प्रचार करने लगे। तात्पर्य धर्म से विपरीत आचरण करने लगे। उसी समय अनेक मत वाले सुध ारक उत्पन्न हुए और उन्होंने अपना अलग-अलग मजहब बताना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि उस समय वेदों का सही ज्ञाता कोई नहीं था। 'यरूसलम' में ईसाई मत 'अरब' में इस्लाम और बौद्ध जैन, सिक्ख (खालसा पंथ) आदि भारत में ही क्रमश: बढ़ने लगे। यह कि अनेक प्रकार आडम्बर और कुसंस्कारों ने आर्यों के उच्च आदर्श और उनके वैदिक संस्कारों को अच्छादित कर दिया। उन्हीं लोगों के चलते जैन और बौद्धमत प्रचलित हुआ। उसी समय अल्पज्ञ ब्राह्मणों ने ऋषियों के नाम से 18 पुराणों की रचना की जिसमें अनेक सृष्टि क्रम के विरूद्ध बातें तथा कुछ काल्पनिक ऐतिहासिक विषय को सम्मिलित कर कथाओं के रूप में सबको सुनाने लगे। लोग वेदज्ञ ब्राह्मण नहीं थे, ये लोग नाम के स्वार्थी ब्राह्मण थे। जन्मगत जाति प्रथा और छूआछूत इन्हीं लोगों ने उत्पन्न किया। वेदादि शास्त्रों को केवल ब्राह्मण ही देख सकते हैं। बाल विवाह का प्रचलन, विधवा विवाह को निषेध उन्हीं लोगों ने वेद विरूद्ध नियम नया। जैनियों की मूर्तियों को देखकर ईन ब्राह्मण लोगों ने भी वेद में आये हुए देवों के नाम से मूर्तियां बनवाकर मन्दिरों में स्थापित कर वाने लगे और लोगों से पूजा पाठ तथा मन्नत करवाने लगे और दान-दक्षिणा लेने लेगे। इस प्रकार धन कमाने का पूजारी-प्रयासों का पक्का मार्ग खुल गया। यहाँ तक कि उन लोगों की प्रतिभा इतनी बढ़ाई कि राजाओं, मन्त्रियों और अमीरों के कुलगुरु बन गये और स्वयं को पुजर्वान लगे। उन्होंने सबके मन में यह संस्कार उत्पन्न कर दिया कि-''ब्रह्म वाक्यं जनार्दन: 'अर्थात् जो बात ब्राह्मण के मुख से निकले, उसे जानो कि भगवान के मुख से निकला और देखिये ''ब्रह्मद्रोही विनश्यति'' जो ब्राह्मण से द्वेष करता है उसका नाश हो जाता है। उस समय के सब लोग उन ब्राह्मणों से डरते थे। यहां तक कि युद्ध करने का समय वही लोग निर्धारित करते थे। इसीलिए तो उन्हीं लोगों के चलते भारत पराधीन हुआ और विज्ञान में उन्नति कर सका। क्योंकि इन ब्राह्मणों के पूर्वजों ने अपने रचित पुराणरूपी बादलों से वेद विद्यारूपी सूर्य को ढाँक दिया था। आगे चलकर एक उन्हीं के शाखाओं में से 'वाममार्गीमत उत्पन्न हो गया जो बिल्कुल उल्टे काम धर्म के नाम पर करने लग गये (उन्होंने अनेक ग्रन्थों में प्रक्षिप्त किया।) मद्य, पान, यज्ञादि में पशु बलि तथा अथर्ववेद, जादू-टोने का तान्त्रिक ग्रन्थ है का प्रचार किया जाने लगा। अत: वेद विद्या के प्रति बहुत अन्याय किया गया। महीधर, सायण, उव्वट और मैक्समूलर ने बिना वैदिक व्याकरण के वेदों का अनेक अनर्थ अपने-अपने मत के अनुसार कर डाले। मैक्समूलर ने तो वेद मन्त्रों को भेड़ बकरी चराने वाले गड़रि का गीत बता दिया। किसी ने वेद को बहुदेववाद बताया तो किसी ने उसका अश्लील भाष्य कर डाला। यहां तक कि आर्यो को गौबधकारी, मांसाहारी और शिकारी बताकर उन आर्य एवं ऋषियों के सबसे प्राचीन आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास ज्ञान के वेद एवं वैदिक साहित्य को बर्बाद कर उसे साधारण पुस्तक बना डाला, जिसका लाभ भारत के पराधीनता के समय अंग्रेजो के इतिहासकारों ने उठाया। उन्होंने भी आर्यो को गोमेध का अर्थ, गोबध, मांसाहारी, शिकारी घोषित कर वेदों में इतिहास है तथा इन सब वैदिक शास्त्रों उपनिषदों की रचना तीन हजार वर्ष पूर्व ही रचे गये थे। उन्होंने भी वेदों के सत्यार्थ को न समझकर आर्यों और हमारे वैज्ञानिक ऋषियों के, उनकी वैदिक सभ्यता को नष्ट करने में कोई असर नहीं छोड़ा।

(जैसे 2000 वर्ष पूर्व अंग्रेजों के पूर्वज जंगली और असभ्य थे और जैसे 14 वर्ष पूर्व अरब के कुरैशवंशी लोग मूर्तिपूजक और अत्याचारी थे उसी प्रकार उन अंग्रेज इतिहासकारों ने वेद विद्या के ज्ञाता आर्यो की सभ्यता को कुचलने की पूरी कोशिश की। उस समय किसी का साहस नहीं था कि मानव को वेदों के सत्यार्थ का सही ज्ञान करा सके, किन्तु धन्य है ऋषि दयानन्द को जिनका 19वीं सदी में आविर्भाव बहुआ और जो आर्यो का समाज एवं वेदों का सत्यार्थ लुप्त हो गया था उसे सन् 1875 में पुन: स्थापित कर दिया। यदि ऋषि दयानन्द सबके मन से वैदिक शास्त्रों के अनर्थ एवं कुसंस्कारों का पर दान हटाते तो किसी को वेद विद्या की ही पुस्तक है का सहीज्ञान न हो पाता। यह सत्य है मानव धर्म की सुरक्षा के लिए अधर्म को दूर करने के लिए और ईश्वरीय ज्ञान वेद को उद्धार करने के लिए महात्माओं का जन्म अवश्य

होता है। स्वामी सर्वदानन्द जी 'आनन्द संग्रह' लिखते हैं कि जिस प्रकार धूमकेतु 'कभी-कभी संसार पर चमकते हैं, उसी प्रकार महापुरुष ऋषि होकर संसार के उपकार के लिए कभी कभी आते हैं। स्वामी दयानन्द ऐसे ही एक ऋषि थे जो संसार के उपकार के लिए आये थे। ऋषि के पश्चात् जब तक सक्रिय महात्मा और संन्यासी तथा आर्य विद्वान थे तब तक अनेक जग हुआ आर्य समाज की स्थापना तथा आर्य मन्दिरों का निर्माण होता रहा। यह विकास क्रम 100 वर्षो तक चलता रहा किन्तु आनन्द स्वामी के पश्चात्, धीरे-धीरे आर्य समाज के मन्त्रियों में आर्थिक आदि अनेक विषयों को लेकर मतभेद के कारण आर्य समाज का प्रचार-प्रसार में कमी होने लगी और उधर ब्राह्मणवाद मूर्तिपूजकों का पुनः नाना प्रकार के कुसंस्कार पनपने लगा। आज भारत में धर्म की ऐसी दशा हो गई है कि ऋषि के समय से अधिक अवैदिक प्रथा का प्रचलन होने लगा है। यथा-कृष्ण के साथ राधा को जोड़ना। देवी के स्थान पर पशु बलि देकर मन्नत पूरा करना। मूर्ति को शक्ति रूप समझना। ईश्वर प्राप्ति के साधन अष्टांग योग के स्थान पर मूर्ति को ही इष्टदेव समझना आदि।

मु.पो.-मुरारई, जिला-वीरभूम (पश्चिम बंगाल), मो. 8158078011

काम में ईश्वर का साथ मांगो
लेकिन,
ईश्वर काम कर दे ऐसा मत मांगो....

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा
परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा
गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा यात्रा संस्मरण

□ ईश्वर हन्दूजा

यात्राओं का अनुभव आनन्द और समृतियों का अलग ही मजा है, किन्तु धार्मिक यात्राओं और वह भी टंकारा की यात्रा का तो कहना ही क्या? चण्डीगढ़ निवासी श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री सतपाल (हरीश) और विजय आर्य जी ने इस वर्ष भी पूर्व वर्षों की भांति दो तीन महीने पहले से ही कुछ सदस्यों को लगभग 22 थे तैयार करके उनकी टिकटें आरक्षित करवा ली और टंकारा ट्रस्ट को इस बारे में सूचित कर दिया था। सभी सदस्यों को कितनी उत्सुक्ता और जिज्ञासा होती है। महर्षि दयानन्द के बोधोत्सव पर टंकारा पहुचने की और हो भी क्यों न हो। वहां से एक नई प्रेरणा जीवन जीने की राह मिलती है।

हम सभी चण्डीगढ़ के 22 यात्रियों में 24.02.2014 को रात को 2:30 बजे कालका मेल से अपना स्थान प्राप्त कर लिया और गाड़ी के चलने से पहले रेलवे स्टेशन पर यज्ञ किया और जय कारा लगाते हुए भजन और ऋषि के गीत गाते हुए सुबह दिल्ली पहुंचे। दिल्ली से पोरबन्दर एक्सप्रैस गाड़ी लेकर राजकोट के लिए रवाना हुए। रास्ते में सब सदस्य एक डब्बे में इकट्ठे हुए। प्रार्थना मन्त्र वाचिक हवन, भजन किया और वातावरण को पवित्र यात्रामेव बना दिया। इसके पश्चात् सभी ने प्रात: राश और दोपहर का भोजन इस प्रकार मिलकर खाया जैसे कि एक ही परिवार के सभी सदस्य हों। सायंकाल 4:30 बजे ब्यावर (राजस्थान) स्टेशन पर वहां की आर्य समाज के कुछ सदस्यों ने स्टेशन पर भव्य स्वागत किया और ऋषि के जयकारे लगाते हुए, रेलवे स्टेशन को एक भव्य नजारा बना दिया। आर्य समाज ब्यावर ने हमारे लिए स्वादिष्ट व स्वच्छ भोजन सबको भेंट किया। जयकारों और भजनों से ब्यावर का स्टेशन गुंजायमान हो गया। रेल के सभी यात्री भाव विभोर होकर देख रहे थे कि यह कैसा सुन्दर दृश्य था, जो कि ब्यान नहीं किया जा सकता। दिनांक 25.02.2014 को सुबह 8 बजे राजकोट पहुंचे। टंकारा के गुरुकुल के छात्रों ने हमारा और सभी का स्वागत किया और अपनी बस से टंकारा ले आए। टंकारा आने पर सुन्दर व भव्य प्रवेश द्वारा के अन्दर जब बस पहुंची तो सभी ने ऋषि के जयकारे लगाए। जिससे वातावरण ओर भी सुन्दर हो गया। चण्डीगढ़ वालों के लिए एक बड़ा कमरा साफ-सुथरे बिस्तरों से सुसज्जित था। हमें प्राप्त हो गया और हम नहा धोकर नाश्ता करके यज्ञ शाला में पहुंच गए। यज्ञ शाला की भव्यता को देखकर दिल मोह लिया। 12:00 बजे सत्संग समाप्त होने के पश्चात् विश्राम करने के पश्चात फिर ऋषि की जन्म स्थली, गऊशाला और ऋषि बोध मन्दिर देखने चले गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती के त्याग, कष्टों व परोपकारों की भावनाओं का अनुभव हो रहा था। कुछ देर तो हम उस भूतकाल में खो गए कि कैसे उन्होंने यह सब त्याग किया गया होगा। रात का, दोनों दिन का कार्यक्रम बहुत अच्छा था, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने लघुनाटिकाओं द्वारा आजकल की बुराइयों पर कटाक्ष करके शिक्षा देने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री सोमदेव जी ने ऋषि के जीवन और टंकारा ट्रस्ट के इतिहास पर प्रकाश डाला। श्री जगत राम, श्री अमर सिंह और श्री पंडित सतपाल जी ने स्वरचित भजनों को गाकर सबको आनन्द विभोर कर दिया।

प्रात: काल 4:00 बजे उठकर प्रभात फेरी पर गए और नहा धोकर पुन: यज्ञ शाला पहुंच गए। श्री रघुनाथ राय आर्य अपने परिवार सहित यजमान बने। आचार्य रामदेव और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने यजुर्वेद का सुन्दर गान किया। फिर श्री पंडित पथिक जी और श्री अमर सिंह जी ने ऋषि के भजन गाकर यज्ञशाला को गुंजायमान कर दिया। चण्डीगढ़ के दो सदस्यों को सुन्दर शालों से सम्मानित किया गया। श्री रघुनाथ राय आर्य और श्री सुशील भाटिया के कार्यों की सराहना भी की।

श्री अजय सहगल टंकारा वाला सुपुत्र श्री राम नाथ सहगल ने बड़ी कुशलता से मंच का संचालन किया। यज्ञ शाला में अनुशासन व व्यवस्था पर पूर्ण ध्यान रखा गया, जिससे वातावरण बड़ा शान्त व पवित्र बना रहा और श्री अजय सहगल टंकारा वाला के कुशल नेत्रों में उनके पिता रामनाथ सहगल की समृद्धि झलकती रही। श्री अजय सहगल ने इतने बड़े ऋषि उत्सव का नेतृत्व व भोजन की सुन्दर व्यवस्था, यात्रियों का ठहरने का प्रबन्ध, स्वच्छ जल, छाच प्रात: दूध, चाय गर्म पानी की प्रचुरता ने सबको सन्तुष्ट और विभोर कर दिया। शोभा यात्रा का दृश्य जो शीघ्र ही अजय सहगल टंकारा वाला के नेतृत्व में निकाली गई। वह दृश्य देखने वाला था। बड़ी ही सुन्दर भव्य था। सबको ऐसा लग रहा था जैसे महर्षि जी शोभा यात्रा में आए हुए हों। सभी सदस्यों की पगड़ियां दुपट्टे व ओम ध्वजों से वातावरण बड़ा ही भव्य दिखाई देता था। विभिन्न आर्य समाजों से आए हुए व्यक्तियों ने अपने हाथों में ध्वज लेकर पीत वस्त्रों से सज्जित होकर टंकारा की गलियों में निकल पड़े। मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी का इससे पूर्व फूल मालाओं से स्वागत किया गया। उन्होंने सबको ध्वज दिखाकर शोभा यात्रा को जाने का आवहन किया। टंकारा की गलियों में शोभा यात्रा का कई जगह शीतल जल, छाच और टोफियां आदि से स्वागत भी किया गया। सबसे बड़ी बात ये थी कि हमारे मुस्लिम भाइयों ने भी शोभा यात्रा में सम्मलित सदस्यों को शरबत पिलाकर स्वागत किया। दिल्ली से आए मोटर साईकलों पर आर्य वीर दल (युवा) द्वारा टंकारा आए और अपने सुन्दर आचार/भूमिकाएं और करतब दिखाएं। पडित श्री अमर सिंह जी ने ऋषि के भजनों को गाकर सभी युवकों और युवतियों में उत्साह भर दिया।

रात का कार्यक्रम भी बहुत आकर्षक था। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने लघुनाटिकाएं दिखाई और मुख्य वक्ता श्री पूनम सूरी, जो आर्य समाज और डी.ए.वी. संगठन के प्रधान हैं। उन्होंने आर्य समाजों के संगठन और डी.ए.वी. स्कूलों व कालेजों की शिक्षा पर बल दिया और इसके प्रसार और महत्व को विस्तार से बताया। सभी को आर्य समाजों के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग किया। कई विद्वानों, सन्यासियों और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और अन्य कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया। भुज और कच्छ से आर्य समाज की महिलाओं ने भोजन की व्यवस्था सम्भाली हुई थी। उन्होंने श्री अजय सहगल को भी सम्मानित किया। सारांश ये कि ये बड़ी यात्रा सुखन्द और आनन्ददायक थी। कोई कहीं भी कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ। श्री अजय सहगल टंकारा वाले और श्री रामनाथ सहगल को भगवान स्वस्थ रखे। इन्होने तो स्वामी जी के ऋण से उर्त्तदण होने के लिए दिन-रात लगाकर टंकारा का ऋषि बोधोत्सव को सुशोभित किया। मेरी सभी से प्रार्थना है कि वह स्वयं वहां एक बार तो अवश्य टंकारा में पहुंच कर ऋषि जन्म स्थान और ऋषि जन्म स्थान को महत्व दें और प्रेरणा प्रति वर्ष वहां जाने के लिए उत्साहित करें।

– मंत्राणी, स्त्री आर्य समाज, सैक्टर-7, बी., चण्डीगढ

गीता के जीवनोपयोगी तीन श्लोक

❐ खुशहाल चन्द्र आर्य

मैंने डॉ. महेश विद्यालंकार द्वारा लिखित "सरल गीता ज्ञान" शीर्षक नाम की पुस्तक पढ़ी। पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। यह पुस्तक केवल पठनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। डॉ. जी ने इस पुस्तक में गीता के मुख्य-मुख्य बिन्दुओं को बड़ी सरल भाषा में समझाया है। जिसको एक साधारण व्यक्ति भी आसानी से समझ सकता है। डॉ. जी ने इस पुस्तक को लिखकर मानव मात्र का बड़ा कल्याण व उपकार किया है। गीता ज्ञान केवल आदर्श ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन के पग-पग पर काम आने वाला ज्ञान है। इसलिए इस पुस्तक को हर व्यक्ति को पढ़ना चाहिए ताकि वह अपने जीवन को सफल बना सके। मैंने इस पुस्तक को सरसरी नजर से पूरी पढ़ी है। वैसे तो गीता के सभी श्लोक जीवन में काम आने वाले है, उनमें भी मुझे तीन श्लोक इतने अधिक पसन्द आये जिनको जीवन में उतारने से जीवन केवल सफल ही नहीं बल्कि जीवन को उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर बढ़ाते हुए जीवन को सार्थक..... भी बना सकते हैं। ये तीनों श्लोक एक-दूसरे पूरक है और जीवन के लिए अति उपयोगी भी हैं। श्लोक इसी भाँति हैं।

1. योगस्थः कुरु कर्माणि, त्यक्त्वा संग धनञ्जयः- हे अर्जुन! संसार में रहते हुए अपने धर्म तथा कर्त्तव्य को निभाते हुए अपने आत्मज्ञान को जागृत रखते हुए, अपने जीवन-लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते चलो। कठिनाइयों से घबराओं नहीं, डरो नहीं। जीवन का ही नाम संघर्ष है। जो संघर्ष से डरते है, वे कायर कहलाते हैं। गीता संसार से भागने की बात नहीं करती है। वह तो कहती है-भागो नहीं जागो ज्ञानपूर्वक, नियमपूर्वक तथा त्यागपूर्वक संसार का भोग करो और घर-गृहस्थी में रहते हुए ज्ञान, कर्म और उपासना को पकड़े रहो। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के माध्यम से मानव को जीवन-मृत्यु होने का सन्देश दिया है। गीता जीने की कला सिखाती हैं।

गीता प्रेरणा देती है-सच्चा इंसान वही है जो सच्चाई व ईमानदारी के रास्ते पर चलता हुआ हर परिस्थिति में अपने को सन्तुलित बनाए रखता है और अपने धर्म और कर्म नहीं छोड़ता है।

2. यज्ञार्थात कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः- जो कर्म किए जाए, वे यज्ञार्थ व परोपकार के लिए हो और भगवान को समर्पण करके करें। तभी इन कर्मो में अनासक्ति-भाव आयेगा, स्वार्थ-भाव छूटेगा और परमार्थ भावना जगेगी। ऐसा व्यक्ति दुनिया में रहता हुआ, सारे काम, धन्धे सम्भालता हुआ भी अध्यात्मिक व्यक्ति है तथा साधु व त्यागी है। परोपकार एवं त्याग-भावना से किए हुए सभी कार्य "यज्ञ" कहलाते है। जो भी अच्छे कर्म हैं, वे सभी यज्ञ हैं। सृष्टि में परमात्मा का अखण्ड यज्ञ चल रहा है।

यज्ञ की भावना से सृष्टि में खुशहाली बनी रहती है। जो मनुष्य स्वार्थभाव से ऊपर उठकर कर्म करते हैं, वे कर्म उनके लिए बन्धन नहीं बनते है। कर्म-बन्धनों से ही मानव को सुख-दुःख मिलता है। कर्म-बन्धन से छूटना ही मुक्ति कहलाता है। अहंकार बुद्धि से किए हुए कर्म व्यक्ति को बन्धन में डालते हैं

3. लिप्यते न स पापेन पद्म पत्र मिवाम्भसाः- मनुष्य को दुनिया में ऐसे रहना चाहिए जैसे पानी में कमल रहता है। पानी जितना चढ़ता जाता है, कमल उतना ऊपर उठता जाता है। पत्ते पर पानी नहीं टिकने देता है। गीता का यही जीवन दर्शन है। गीता कमलवत जगत् में रहना सिखाती है। दुनिया में रहो, मगर उसमें फंसो नहीं। बाजार से गुजर जाओ मगर बाजार के लुहावने-सुहावने आकर्षण तुम्हें खींच न पायें। संसार के भोग पदार्थ, आकर्षण, धन-दौलत और घर-परिवार आदि में इतने मत डूब जाओ कि अपना स्वरूप तथा लक्ष्य ही भूल जाओ। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-"यह संसार तुम्हारे भोग के लिए है, पर तुम्हारा नहीं है। तु इस जगत के माली हो, मालिक नहीं हो। यह जगत् तुम्हें कुछ समय के लिए मिला है। एक दिन तुम्हें इसको छोड़ना होगा। यदि छोड़ने का भाव मन में बनाये रखोगे तो छोड़ते हुए दुःख, कष्ट व परेशानी न होगी। दुःखी, परेशान व बेचैन वही लोग होते हैं जो अज्ञान-वथ संसार को ही सब कुछ समझ लेते हैं। वे जगत् को पाना और भोगना ही जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं।

आज दुनिया धर्म-कर्म, उद्देश्य तथा भगवान को भूलकर सुख-साधनों और धन-दौलत आदि के लिए पागलों की तरह दौड़ जा रही है। इसीलिए दुःखी, अशान्त व परेशान है। भोग पदार्थो का कोई अन्त नहीं है। वर्तमान जगत् में भोग की चीजों का जाल बिछा हुआ है। आम आदमी इन भोगों को पाने तथा भोगने के लिए नशे एवं पागलपन में दौड़ा जा रहा है। अच्छी दौड़ लगी है। हर आदमी जल्दी से जल्दी अधिक से अधिक भोगने व संग्रह की चाह में भाग रहा है। आज जो धन कमाया व इकट्ठा किया जा रहा है, उसके पीछे इन्द्रियों के भोगों की ललक है। भोगों से जो रोग उत्पन्न होंगे, उन रोगों में अधिकांश धन खर्च हो रहे हैं।

गीता सावधान करती हुई चेतावनी देती है कि आज तक संसारिक भोग-पदार्थो और सुविधाओं आदि से कोई भी तृप्त व सन्तुष्ट नहीं हुआ है। जितना मनुष्य भोगों को भोगता जाता है, उतनी ही भोगों की प्यास बढ़ती जाती है। जलती हुई आग में जितना घी डालते जायेंगे, उतनी ही आग और तेज होती जायेगी और जितने भोगों को भोगते जायेंगे, उतना ही अतृप्ति व अशान्ति और बढ़ेगी। यह अटल नियम है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-"संसार के पदार्थों का उतना ही उपयोग और उपयोग करो, जितनी जरूरत है। अधिक भोग मनुष्य को पतन की ओर ले जाते हैं और ये आत्मिक बल को क्षीण कर देती हैं। भोग-पदार्थ इन्द्रियों की शक्ति कमजोर बना देती है। इन्हीं के कारण अनेक प्रकार के रोग शरीर को घेर लेते हैं। वह उन्हीं साधन-सुविधाओं व भोग-पदार्थो का संग्रह करता है जो उसके जीवन और उद्देश्य में सहायक है। बाकी को छोड़ देता है।

गीता का स्पष्ट चिन्तन है कि भोग-पदार्थो, धन-दौलत, सुख-सुविधाओं आदि के पीछे सब कुछ भुलाकर पागलों की तरह मत दौड़ो। यह माया व भोग-पदार्थ तुम्हें ठग लेंगे। जो भी इनके पीछे दौड़ा, वही अन्त में निराश होकर लौटा। ये चीजें समाप्त नहीं होती, परन्तु जीवन समाप्त हो जाता है। माया-मोह का कोई अन्त नहीं है। इसे जितना फैलाते जाओ, यह और फैलता जाता है। जैसे चूल्हे में कितनी भी लकड़ियां डालते जाओ, कभी चूल्हे का पेट नहीं भरता है। ऐसे ही माया के लालची और भोगों के दास व्यक्ति कभी तृप्त व सन्तुष्ट नहीं होते हैं। ऐसे व्यक्ति सारा जीवन व्यर्थ गवां जाते हैं। जब ठोकर लगती है, आँख खुलती है, तब तक जीवन बहुत आगे निकल चुका होता है। गीता का इस बारे में यही संक्षिप्त सार और सन्देश है।

योग साधनों का इतना ही संग्रह व इच्छाएं करो, जितनी जीवन के लिए बहुत जरूरी है। जितनी कम इच्छाएँ तथा जीवन की जरूरतें कम होंगी, उतने झंझट व संकट कम होंगे। जो साधन साध्य में बाधक बनें, उन्हें तुरन्त छोड़ने में ही कल्याण है। जीवन का साध्य तो संसार में रहते हुए अपने धर्म-कर्म का निर्वाह कते हुए आत्मज्ञान को प्राप्त करके प्रभु-सान्निध्य प्राप्त करना है। इन जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति में जो भोग-पदार्थ, साधन-सुविधाएं, मित्र साथी आदि सहयोगी बनें, उन्हें अपना लो, बाकी को छोड़ने व उनके प्रति तटस्थ भाव अपनाने में ही कल्याण है।

- C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 880 महात्मा गांधी रोड, दोतल्ला, कोलकत्ता-700007, फोन 22183825, 64505013

सच्ची गरिमा किस की गुरु की या गोविन्द की

❒ श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

सद्गुरु का आश्रय-सहारा सदा मिले। 'सति गुरु तेरी ओट'। एक प्रसिद्ध उक्ति है- 'गुरु गोविन्द दोनो खड़े, काके लागे पायं, बलिहारी गुरु आपने, जो गोविन्द दियो दिखाय।' एक सामान्य जिज्ञासु या साधक के सम्मुख प्रेरणा के दो मुख्य स्रोत कहे जाते हैं, एक पग-पग पर रास्ता दिखलाने वाले पथ-प्रदर्शक गुरु और दूसरे अपने गुरु या आचार्य के प्रेरणा के सूत्रधार गोविन्द। कहते हैं गुरु को नमस्कार है, क्योंकि गुरु, ब्रह्मा, विष्णु शिव के तुल्य हैं, गुरु साक्षात परब्रह्म ओंकार है।

गुरु ब्रह्म गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

गुरु का अर्थ है, श्रद्धेय, आदरणीय, अध्यापक, शिक्षक। पारिभाषिक रूप से गुरु वह है, जो गायत्री मन्त्र का उपदेश करे और शिष्य को अध्यापन कराए। रघुवंश में कविकुलगुरु कालिदास की उक्ति है-'आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया। गुरुओं की आज्ञा पर संकल्प-विकल्प न करें, उसका दृढ़ता से पालन करें। इसकी तुलना में गोविन्द का अर्थ है-गोपालक, गौशाला का अध्यक्ष, कृष्ण, बृहस्पति। वैसे पार्थिक गुरु और गोपालक गोविन्द की अपेक्षा उन दोनों के ही असली नियामक सूत्रधार निराकार निर्गुण परब्रह्म ओंकार परमात्मा जो घट-घट के वासी और सच्चे गुरु और पृथ्वीरूपी गौ के सच्चे गोपाल है। उक्त वचनों में भी किसी गोपालक स्वामी की जगह जगन्नियन्ता परमेश्वर का ही गुणगान किया गया है।

बम्बई महानगर में श्री महादेव गोविन्द रानाडे नामक एक विख्यात न्यायाधीश रहते थे। वह देश-विदेश की अनेक भाषाऐं सीखना चाहते थे। उन्होंने बंगला सीखने के लिए एक बंगाली नाई की सहायता ली। वह हजामत बनवाते समय बंगला भी सीखने लगे। इस पर रानाडे की पत्नी ने अपने पति से कहा-'एक जज होकर भी आपने एक नाई को अपना गुरु बनाया, लोग क्या कहेंगे? क्या नाई को गुरु बनाना अपमानजनक नहीं है?' न्यायाधीश रानाडे ने कहा-'इसमें अपमान की क्या बात है। अवधूत दत्तात्रेय ने कीड़े-मकोड़ों, पशु-पक्षियों आदि चौबीस को अपना गुरु बनाया था। उन जैसे साधक ने कीट-पतंगों पशु-पक्षियों को अपना गुरु बनाया था, परन्तु मैंने तो मनुष्य-इन्सान को अपना गुरु बनाया है।

कीट-पतंगो से भी शिक्षाः स्वभावतः जिज्ञासा होगी कि अवधूत दत्तात्रेय को किन चौबीस कीट-पतंगों, पशु-पक्षियों सरीखे गुरुओं से सीख मिली थी और उन्होंने इन मूक प्राणियों से क्या शिक्षा ग्रहण की थी?

कहते हैं कि एक अवधूत को मस्ती में घूमते विचरण करते देखकर राजा यदु ने पूछा-'संसार में सभी लोग इच्छाओं और लालच की आग से जल रहे हैं, पर आप को देखकर लगता है कि आप तक उनकी आँच तक भी नहीं पहुंच पाती। आपको देखकर लगता है कि जंगल में आग लगने पर कोई मस्त हाथी जल के भीतर क्रीड़ा कर रहा हो। कृपा कर बतलाऐंगे ऐसा क्यों?

वह अवधूत दत्तात्रेय थे उन्होंने जवाब दिया-''मैंने अनेक गुरु बनाए हुए हैं। उनसे सीख लेकर इस तरह मैं निर्द्वन्द्व-मुक्त होकर विचरण करता हूँ।' अवधूत दत्तात्रेय के गुरु थे-पृथिवी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, कबूतर, अजगर, समुन्द्र, पतंग, मधुमक्खी, हाथी शहद ले जाने वाला, हिरण, मछली, पिंगला, वेश्या, कुरर पक्षी, बालक, कुमारी कन्या, बाण बनाने वाला, सांप, मकड़ी और भृंगी कीड़ा।

दत्तात्रेय जी ने बतलाया-'उन्होंने पृथिवी से धीरज रखने क्षमा करने की शिक्षा ग्रहण की, पृथिवी सब तरह के उत्पात करने के बावजूद न रोती है, न बदला लेती है, इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को कभी अपना धीरज नहीं खोना चाहिए। इसी प्रकार पृथिवी की सन्तति हैं वृक्ष और पहाड़। उनका जन्म ही दूसरों के उपकार के लिए हुआ है-सज्जन पुरुषों को दोनों से परोपकार की शिक्षा लेनी चाहिए। दत्तात्रेय ने बतलाया कि उन्होंने पाया कि प्राणी की प्राणवायु के लिए आवश्यक भोजन ही पर्याप्त है। वायु से मैंने सीखा किसी गुण-दोष से लिपटे नहीं, वायु की तरह शुद्ध रहें। आकाश से मैंने सीखा जैसे वह सब से अछूता है, किसी से लगाव नहीं, उसी प्रकार आत्मा को सब से अछूता रखें। जल से सीखा जैसे वह स्वच्छ, मधुर और पवित्र रहता है, वैसे ही हम भी बने रहें। अवधूत दत्तात्रेय ने अग्नि से सीखा कि सब कुछ पचा लेना चाहिए और किसी पदार्थ का संग्रह नहीं करना चाहिए।

लकड़ियों और पदार्थों में लगी अग्नि पदार्थो जैसी जान पड़ती है, वैसी नहीं होती, इसी प्रकार सब में व्याप्त आत्मा नाना रूपों में दिखलाई देती है, परन्तु भीतर एक है।

अवधूत दत्तात्रेय ने चन्द्रमा से सीख ली कि जैसे कलाओं के घटने-बढ़ने के बावजूद चन्द्रमा एक रहता है, जन्म से मृत्यु तक शरीर घटता-बढ़ता है, पर आत्मा पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दत्तात्रेय जी ने कपोत या कबूतर से शिक्षा ग्रहण की, किसी से अधिक स्नेह नहीं करना चाहिए, अन्यथा बहुत कष्ट भोगना पड़ता है।

उन्होंने अजगर से शिक्षा ली मीठा, फीका, कम ज्यादा जो कुछ भी मिले उसी में सन्तोष माने। अवधूत दत्तात्रेय ने पतंगे से शिक्षा ली कि रूप के मोह में पढ़कर आग में न कूदें। भौंरे से सीख ली कि जहां से भी सार तत्त्व मिले, उसे ले लें। हाथी से शिक्षा ली कि काठ या लकड़ी से बनी स्त्री को भी कभी स्पर्श न करें।

अवधूत दत्तात्रेय ने मधु या शहद का छत्ता तोड़ने वाले से शिक्षा ली कि किसी भी चीज का संग्रह न करें। 'खाय न खर्चे सूमधन, चोर सबै ले जाएं। हिरण से सीख ली कि संगीत, नाच-गाने के चक्कर में कभी न फंसे। मछली से शिक्षा ली की जीभ के स्वाद में कभी न पड़े। अन्यथा कांटे में फंसे मांस या रोटी के टुकड़े में प्राण गंवाना होगा। जीभ को जीतना जरूरी है, जिसने जीभ को जीत लिया, सारी इन्द्रियाँ जीत ली।

पिंगला नामक वेश्या से शिक्षा ली कि उम्मीद खास तौर से धन की उम्मीद कभी न करें, अन्न की आशा छोड़ने पर वह सुख से सोई। कुररपक्षी से शिक्षा ली कि किसी भी पदार्थ का संग्रह नहीं करना चाहिए। संग्रह से दुःख होता है, जो अकिंचन है, वह सुखी रहता है। बालक से यह सीख ली कि हमें सदा निश्चिन्त और आनन्द में मगन रहना चाहिए। कुमारी अन्या से शिक्षा ली कि कई लोग साथ रहें तो संघर्ष होता है, इसलिए अकेला ही विचरण करे। वह कुमारी धान कूट रही थी, हाथों में पहनी चूड़ियाँ आवाज करने लगी, बाहर मेहमान बैठे थे, तब उसने केवल एक-एक चूड़ी रखी, तब बिना आवाज के धान कुट गया।

एक बाण बनाने वाला कारीगर बाण बना रहा था, उसके पास से बाजे-गाजे के साथ बारात निकल गई, उसे पता ही नहीं चला। उससे सीखा, आसन प्राणायाम, अभ्यास-वैराग्य से मन को वश में कर एक लक्ष्य की पूर्ति में लगा दें। अवधूत दत्तात्रेय ने सांप से शिक्षा ग्रहण की कि उसकी तरह एकाकी विचरे, कहीं घर न बनाए। मकड़ी से शिक्षा ली परमेश्वर भी उसकी तरह जाल फैलाकर उसी में विहार करते हैं, फिर उसे निगल जाते हैं। भृंगी ये यह शिक्षा ग्रहण की कि एकाग्र होकर मन को लगाने पर मन जिसमें लगा होता है, वह स्वयं भी वही हो जाता है। मन चाहे प्रेम से लगाओ, चाहे द्वेष से या भय से से लगाओ तुम उस जैसे हो जायेगे।

गुरु वह है, मानव जिससे कुछ ग्रहण करे, कोई शिक्षा या सीख ले, फिर वह चाहे कीट पतंग तो, या प्राणी विशेष, प्रकृति का कोई तत्त्व हो, उन सबसे अवधूत साधक दत्तात्रेय की तरह शिक्षा ग्रहण की जा सकती है, अथवा एक सामान्य हीन कार्य करने वाला मानव हो, शिक्षार्थी, न्यायाधीश रानाडे की तरह उससे भाषा या शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

भारत देश में युगों से गुरु-शिष्य परम्परा रही है, यहां गुरु विश्वामित्र, वशिष्ठ, संचोपति, धौन्य, याज्ञवलक्य, द्रोणाचार्य, विरजानन्द आदि अनेक प्रात: स्मरणीय गुरु आचार्य हुए हैं। उनके भी श्रीराम, श्री कृष्ण, अुर्जन, सुदामा, शंकर, विवेकानन्द, दयानन्द, सरीखे प्राचीन अर्वाचीन शिष्य हुए हैं। गुरुकुलों एवं ऋषि आश्रमों की लम्बी परम्परा रही है। भगवान के चरणों में उनकी शिक्षाओं को ग्रहण करने में गुरुओं की भूमिका की सदा महत्ता रही है, जहां से भी कोई अच्छी शिक्षा मिले, उसे लो। तैत्तिरीय उपनिषद में लिखा है-विद्याध्ययन पूर्ण होने पर गुरु उन्हें सीख देता था-सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय सत्यचरण अपने सासांरिक सामाजिक दायित्वों के निर्वाह में कभी प्रमाद न करो। माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि दिव्य शक्तियों का समादर करो। गुरुजनों से जितनी अच्छी शिक्षाऐं मिली हैं, उनका पालन करो। गुरुओं की शिक्षाओं पर चलो, तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा। यही गुरुओं एवं गुरु परम्परा की दीक्षा है।

– बी-22, गुलमोहरपार्क, नई दिल्ली

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

एक बार फिर आना होगा....

❑ हरि कुमार साहू

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 1
खूब हो रही पत्थर-पूजा, निराकार प्रभु को हैं भूले।
नए नए पाखण्ड रचा कर, ढोंगी दलदल बाबा फूले।।
ऐसे धूर्त ठगो को अब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 2
भारत में हिंदी की देखो कैसी दुखद हुई है दुर्गति?
जन-मानस में फिर स्थापित हो हिन्दी, ऐसी दो सन्मति।।
भारत माँ को हिन्दी के किरीट से पुन: सजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 3
नारी आज भोग्या बन कर भारत में लुटी पिटी है।
मातृ शक्ति को पूजित, सम्मानित करने की वृत्ति मिटी है।।
फिर से नारी को भोग्या से पूज्या हमें बनाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा। 4
गूँजे बेटी की किलकारी, ऐसी बहे स्नेह की गंगा।
कन्या-भ्रूण मिटाने वालों को समाज में कर दें नंगा।।
बेटी के हत्यारों को अब फाँसी पर लटकाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 5
भारत में कट रहीं आज भी नित लाखों गौ माताएँ।
इनकी दारूण व्यथा कथा हम किसे सुनाएँ किसे बताएँ।
जन जन में जा कर **गौ करूणा निधि** का अलख जगाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 6
भूले मात पिता की सेवा, भूले वृद्ध जनों का आदर।
गुड्डा गुड़िया पूज रहे हैं, चढ़ा रहे कब्रों पर चादर।।
दसवाँ, मृतक भौज, तेरही, बरखी है व्यर्थ, बताना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 7
शाकाहार त्याग कर दुनिया हुई जा रही मांसाहारी।
धूम्रपान अरू मद्यपान से दस दिश फैल रही बीमारी।।
हो आहार विहार सात्विक, यह सबको समझाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 8
पर्यावरण अशुद्ध हो रहा, प्रकृति हो रही है नित आहत।
जल, थल, वायु हो रहे दूषित यज्ञ मात्र से होगी राहत।।
यज्ञ सर्व जन के हित में है, सबको यज्ञ कराना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 9
नया नाम डेटिंग का लेकर, खूब वैश्यावृत्ति हो रही।
नवयुवकों में बेशर्मी से इसकी अति आवृत्ति हो रही।।
सत्रह बार जहर खाया है, कई बार फिर खाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।। 10
वेद प्रचारित करने खातिर ईंटे, रोड़े, पत्थर खाए।
कष्ट सहे जीवन भर लेकिन अडिग रहे, तुम न घबराए।।
वेदों के दीपक पर क्या तुम सा कोई परवाना होगा?
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदो का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

पूर्व मंत्री, आर्य समाज गोंड़पारा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तकों से कुछ अमूल्य बातें

बर्थ डे तो मनाये पर साथ ही जीवन की बैलेन्स शीट भी बनायें।

सागर में मिलने वाले नदियों का पानी कभी भी स्त्रोत की और वापिस जाते नहीं देखा गया, वैसे ही हमारी आयु के जो दिन बीत जाते हैं, कभी वापिस नहीं आते। बर्थ डे तो मनायें, जश्न भी करें पर साथ ही अपने जीवन की हिसाब किताब भी करें। बैलेन्स शीट भी बनायें। एकान्त में बैठकर सोचो कि जिस उद्देश्य के लिए यह मानव शरीर मिला था, वह उद्देश्य कितना पूरा हुआ और कितना शेष है। यदि उतना पूरा नहीं हुआ जितना होना चाहिए था, तो दृढ़ संकल्प करो कि आगामी वर्ष में इस घाटे को पूरा करेंगे। उद्देश्य पूर्ती का एक ही साधन है, प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा आत्म चिन्तन और प्रभु चिन्तन करो।

चीं-पी की चिन्ता छोड़ प्रभु में ध्यान लगायें।

एक बूढ़ी माता जी मेरे पास आई और बोली, स्वामी जी मैं ध्यान में बैठती हूं किन्तु ध्यान लगता नहीं। मैंने पूछा क्यों नहीं लगता? तो वह बोली-''घर में बच्चे हैं, पोत पोतियां हैं उनकी चीं पीं समाप्त नहीं होती।

मैंने हंसते हुए कहा-''परिवार में बच्चे होना तो अच्छा है, जिस घर में बच्चे नहीं होते वहां तो सन्नाटा छाया रहता है। उनकी चीं-पीं में ही अपना भजन करो। वह विश्वस्त नहीं दिखी तो मैंने उसे एक कहानी सुनाई।

एक था घोड़े वाला। उसका घोड़ा चीं पीं की ध्वनि से बहुत बिदकता था। एक दिन घोड़े को पानी पिलाने के लिए एक कूएं पर ले गया जहां रहट की चीं पीं की आवाज आ रही थी। घोड़े वाला इस डर से कि घोड़ा विदकेगा, यह सोच रहा था कि जब रहट बन्द होगा तब पानी पिलाउंगा।

तभी कुंए वाले ने पूछा-तुम घोड़े को पानी क्यों नहीं पिलाते?

घोड़े वाला बोला जब चीं पीं बन्द हो जाये तभी पिलाउंगा। कूएं वाला हंस कर बोला-जब रहट चलेगा तो चीं पी. होगी ही। यह रहट बन्द हो गया तो पानी भी बन्द हो जायेगा।

इसलिए इस चीं पीं की चिन्ता छोड़ ध्यान लगाने बैठो। चीं पीं होती भी है तो होने दो। तुम्हारे मन में अगर प्रभु का प्रेम है तो इस चीं पीं के होते हुए भी तुम्हारा ध्यान लगेगा।

संसारिक व्यक्ति के लिए योगाभ्यास क्यों आवश्यक है?

इस का उत्तर महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका में इस तरह दिया है। योगी और संसारिक मनुष्य जब संसारिक कामों में संलग्न होते है तो योगी का मन सदा सुख दु:ख से उपर उठ कर, आनन्द में प्रकाशित होकर, उत्साह और मस्ती में भरा रहता है। इसके विपरीत संसारिक व्यक्ति, जिसने योगाभ्यास नहीं किया होता, दुख और असफलता में बहुत दु:खी हो जाता हैं, और सुख और सफलता में बहुत खुश। कहने का अर्थ है योगी संसारिक वृत्तियों से उपर उठ चुका होता है। जबकि संसारिक व्यक्ति वृत्तियों से उपर उठ चुका होता हैं। जबकि संसारिक व्यक्ति वृत्तियों का दास होने की वजह से अंधकार में फंस कर दु:खी रहता है। क्योंकि इस संसार में रहते हुए ऊँच-नीच, सुख-दुख, रोग-स्वास्थ्य, समस्याएं-उलझने तो सब कुछ लगा रहना ही है, इसलिए संसारिक व्यक्ति के लिए योगाभ्यास, 'ध्यान' जिस का मुख्य अंग है बहुत आवश्यक है। योंगी ध्यान द्वारा यह मालूम कर लेता है कि क्या उसके लिए ठीक है क्या गलत यदि गलत मार्ग पर चला भी जाये तो ध्यान द्वारा यह मालूम होने पर कि यह गलत है, उसको छोड़ देता है। जब कि जो योगी नहीं होता वह इस सोच में चिन्तित रहता है कि क्या करूं।

ऋषि, देवता या महात्मा कौन है?

ऋषि, देवता या महात्मा उनको कहा जाता है जो दूसरों का हित चाहने वाले हों। दूसरों के सुख, कल्याण के लिए बिना इसकी परवाह किए कि दूसरे उसके लिए क्या कर रहे हैं, चाहे कांटे ही विछा रहे हों, लगे रहते हैं। ऋषि, देवता या महात्मा उस बृक्ष की तरह होते हैं जो कि उस की टहनी को काटने वाले को भी छाया प्रदान करता है।

वृक्ष जैसे अपना फल आप नहीं खाते, नदियां अपना पानी स्वयं नहीं पीती, ऐसे ही देवता वह है, जो दूसरों के लिए जीता है। आवश्यकता पड़े तो दूसरों के लिए प्राण भी दे देता है।

दयानन्द की बात अलग थी

❑ ऋषि राम कुमार

जीवन जीने सब आते हैं
खाते पीते चले जाते हैं
उसके जीने की बात अलग थी-दयानन्द की बात अलग थी।
जीवन जीने की कला बताई
सच्चाई की राह दिखाई
उसके चेहरे की बात अलग थी-दयानन्द की बात अलग थी।
नारी को सम्मान दिलाया
पढ़ाना इनको मान बताया
जात-पात की बात अलग थी--दयानन्द की बात अलग थी।
ओ३म नाम का दिया जलाया
हवा में भी बुझने न पाया
इस दिये की बात अलग थी-दयानन्द की बात अलग थी।
पड़ो को हड़काया ऋषि ने
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाया ऋषि ने
गायत्री मन्त्र की बात अलग थी--दयानन्द की बात अलग थी।
आडम्बर को भगाया ऋषि ने
गौ हत्या रूकवाया ऋषि ने
ऋषि निर्वाण की बात अलग थी

- 246/4, मॉडल टाऊन, गुड़गांव (हरियाणा)-122001

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

WHAT HONEY CAN DO FOR YOU?

Far from being just a tasty, sweet food, honey has some remarkable healing properties. In Hinduism, honey 9madhu) is one of the five elixirs of immortality-panchamrita. In temples honey is poured over the deities in a ritual called Madhu abhishekha. The Islamic, Persian and other ancient traditions promote honey as a nutritious health food.

Containing approximately 150 biologically active ingredients, the healing properties of honey have been known to humanity for millennia. In the recent past the medical community has started to focus on this remarkable substance for its anti-bacterial and its antiinflammatory properties-it is now being recommended to patients for the treatment of a wide range of health issues-from coughs and colds to stomach upsets and as a tonic. Interestingly many scientists have found a remarkable synergy between the result of their studies and the traditional usage of honey as a healing substance.

Honey is a powerful immune system booster due to its antioxidant and antibacterial properties. It contains as many antioxidants as spinach, apples, oranges or strawberries giving it a protective effect on the body. Raw honey contains several essential minerals like calcium, iron, sodium, phosphorous, sulphur and potassium, besides vitamins and protein.

The Vitamins found in honey include vitamin C and B. The amount of vitamins change according to the qualities of the nectar and pollen the honey is made from.

Unprocessed or raw honey has the greatest healing properties, as pollen which contains the most active components of the honey is destroyed during processing and exposure to light. While all types of honey have some medicinal properties, in general, darker shades have more antioxidants. These precious properties help to eliminate free radicals in the body that have been linked to several diseases, including cancer.

Famously, because of its antimicrobial properties, honey is used to relieve sore throats, either in a hot dirnk or by the spoonful.

One spoon of fresh honey, mixed with the juice of half a lemon in a glass of lukewarm water and taken first think in the morning, is an effective remedy for constipation and hyperacidity. Fasting on this honey-lemon juice water is higly beneficial in the treatment of obesity without loss of energy and appetite.

Honey is an effective antidote to combat hangover from too much alcohol. It is gentle on the stomach and contains a mix of natural sugar fructose, which speed up the oxidation of alcohol by the liver and act as a 'sobering' agent.

The benefits of honey might seem old fashioned, but they are proven, time-tested and increasingly backed by medical research.

-(Courtesy Aryan Heritage)

पेन्सिल की कहानी

एक बालक अपनी दादी माँ को पत्र लिखते हुए देख रहा था। अचानक उसने पूछा, 'दादी मां! क्या आप मेरी शरारतों के बारे में लिख रही हैं? आप मेरे बारे में लिख रही है ना? 'यह सुनकर दादी माँ रूकीं और बोलीं, 'बेटा, मैं लिख तो तुम्हारे बारे में ही रही हूँ, लेकिन जो शब्द मैं यहाँ लिख रही हूँ उनसे भी अधिक महत्व इस पेन्सिल का है जिसे मैं इस्तेमाल कर रही हूँ। मुझे पूरी आशा है कि जब तुम बड़े हो जाओगे तो ठीक इसी पेन्सिल की तरह होगे।'

यह सुनकर वह बालक थोड़ा चौंका और पेन्सिल की ओर ध्यान से देखने लगा, किन्तु उसे कोई विशेष बात नजर नहीं आयी। वह बोला, 'किन्तु मुझे तो यह पेन्सिल बाकी सभी पेन्सिलों की तरह ही दिखाई दे रही है।' इस पर दादी माँ ने उत्तर दिया, 'बेटा! यह इस पर निर्भर करता है कि तुम चीजों को किस नजर से देखते हो। इसमें पांच ऐसे गुण है, जिन्हें यदि तुम अपना लो तो तुम सदा इस संसार में शांतिपूर्वक रह सकते हो।'

'**पहला गुण:** तुम्हारे भीतर महान से महान उपलब्धियाँ प्राप्त करने की योग्यता है, किन्तु तुम्हें यह कभी भूलना नहीं चाहिए कि तुम्हें एक ऐसे हाथ की आवश्यकता है जो निरन्तर तुम्हारा मार्गदर्शन करे। हमारे लिए वह हाथ ईश्वर का हाथ है जो सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहता है।'

'**दूसरा गुण:** बेटा! लिखते, लिखते, बीच में मुझे रूकना पड़ता है और फिर कटर से पेन्सिल की नोंक बनानी पड़ती है। इससे पेन्सिल को थोड़ा कष्ट तो होता है, किन्तु बाद में यह काफी तेज हो जाती है, और अच्छी चलती है। इसलिए बेटा तुम्हें भी अपने दुःखो, अपमान और हार को बर्दाश्त करना आना चाहिए, धैर्य से सहन करना आना चाहिए। ऐसा करने से तुम एक बेहतर मनुष्य बन जाओगे।'

'**तीसरा गुण:** बेटा! पेन्सिल हमेशा गलतियों को सुधारने के लिए रबर का प्रयोग करने की इजाजत देती है। इसका यह अर्थ है कि यदि हमसे कोई गलती हो गयी तो उसे सुधारना कोई गलत बात नहीं है। बल्कि ऐसा करने से हमें न्यायपूर्वक अपने लक्ष्यों की ओर निर्बाध रूप से बढ़ने में मदद मिलती है।

'**चौथा गुण:** बेटा! एक पेन्सिल की कार्य प्रणाली में मुख्य भूमिका इसकी बाहरी लकड़ी की नहीं, अपितु इसकी भीतर के ग्रेफाईट की होती है। ग्रेफाईट या लेड की गुणवत्ता जितनी अच्छी होगी, लेख उतना ही सुन्दर होगा। इसलिए बेटा! तुम्हारे भीतर क्या हो रहा है, कैसे विचार चल रहे है, इसके प्रति सदा सजग रहो।'

'**अंतिम गुण:** बेटा! पेन्सिल सदा अपना निशान छोड़ देती है। ठीक इसी प्रकार तुम कुछ भी करते हो तो तुम भी अपना निशान छोड़ देते हो। अतः सदा ऐसे कर्म करो जिन पर तुम्हें लज्जित न होना पड़े, अपितु तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का सिर गर्व से उठा रहे। अतः अपने प्रत्येक कर्म के प्रति सजग रहो।' (- साभार प्रकाश ही ज्ञान और जीवन है)

प्रातः काल की प्रार्थना

❒ स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नवन्तः स्याम॥ (यजु.)

पदार्थः-हे (भग) परमैश्वर्यवन्! ऐश्वर्य के दाता, संसार वा परमार्थ में आप ही हो, तथा हे (भगप्रणेतः) आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य है, अन्य किसी के अधीन नहीं। आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ, सो आप कृपा से हम लोगों का दारिद्रय छेदन करके हमको परमैश्वर्यवाले कर, क्योंकि ऐश्वर्य के प्रेरक आप ही हो। अथवा हे (प्रणेतः) सबके उत्पादक, सत्याचार में प्रेरक, उत्तमता से प्राप्ति कराने वाले और पुरुषार्थ के प्रति प्रेरक! हे **(सत्यराधः)** सत्य ऐश्वर्य की सिद्धि करने वाले तथा जो मोक्ष कहाता है उस सत्य ऐश्वर्य का दाता आप से भिन्न कोई भी नहीं! अथवा हे **(सत्यराधः)** विद्यमान पदार्थो में उत्तम ध्यान वाले व उसके देने वाले अथवा सत्य प्रकृतिरूप धनयुक्त! हे **(भग)** अत्यन्त सेवा करने योग्य व सत्याचरण करने वालों को सफल ऐश्वर्य देने वाले ईश्वर! आप कृपा कर **(नः)** हम लोगों के लिए **(इमाम् धियं ददत् उदव)** इस प्रशंसा युक्त सर्वोत्तम बुद्धि को देते हुए हम लोगों की उत्तमता से रक्षा कीजिए अर्थात् जिस उत्तम बुद्धि से हम लोग आपके गुण और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान ज्ञान इनको यथावत प्राप्त हो अथवा हमकों सत्यबुद्धि, सत्यकर्म और सत्यगुणों को **(उदव)** प्राप्त कर, जिससे हम लोग सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थो को यथावत् जानें। हे **(भग प्रणो जनय)** सवैश्वर्योत्पादक! हमारे लिए पूर्ण ऐश्वर्य को अच्छे प्रकार से उत्पन्न कर, सर्वोत्तम गाय, घोड़े और मनुष्य इनसे सहित अत्युत्तम ऐश्वर्य हमको सदा के लिए दीजिए।

हे **(भग)** सर्वशक्तिमन्! आपकी कृपा से सब दिन हम लोग **(नृभिः नृवन्तः प्र स्याम)** नायक बहुत वीर श्रेष्ठ मनुष्यों (पुरुष, स्त्री, सन्तान, भृत्यादि) से युक्त अच्छे प्रकार हो। आपसे यह हमारी अधिक प्रार्थना है कि कोई मनुष्य हममें दुष्ट व मूर्ख न रहें, न उत्पन्न हो, जिससे हम लोगों की सर्वत्र सत्कीर्ति हो, निन्दा कभी न हो। (स.वि.+आर्याभि.+वेदभाष्य)

भावार्थ (1):-जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा, प्रार्थना, ध्यान और उपसना का आचरण पहले करके पुरुषार्थ करते हैं वे धर्मात्मा होकर अच्छे सहायवान् हुए सकल ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।

(ऋ.दया.कृत.ऋग्वेद भाष्य मं. 7/सू.41/मं.3)

भावार्थ (2):-मनुष्यों को चाहिए कि जब-जब ईश्वर की प्रार्थना तथा विद्वानों का संग करें तब-तब बुद्धि की ही प्रार्थना वा श्रेष्ठ पुरुषों की चाहना किया करें। (ऋ.दया.कृत.यजु.भाष्य अ. 34/मं. 36)

टिप्पणीः- (क) ईश्वर सत्याचार व पुरुषार्थ में प्रेरक हैं अर्थात् जीव को अन्तर्यामी रूप से विद्या-विज्ञान देकर सत्याचार व पुरुषार्थ में रूचि उत्पन्न करने वाले हैं। (ख) प्रकृति, जो कि संसार को बनाने की सामग्री है, ईश्वर की सम्पत्ति है। यह सम्पूर्ण सृष्टि भी ईश्वर का ध न है। सत्व, रजस् व तमस् इनकी साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं। (ग) ईश्वर अत्यन्त सेवा करने के योग्य हैं अर्थात् ईश्वर की अत्यन्त सेवा (आज्ञापालन) करनी चाहिए क्योंकि जितना हित या सुख जीवों का ईश्वर से होता है उतना अन्य किसी से नहीं। (घ) ईश्वर सत्याचरण करने वालों को सज्जनों को ही अपना ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, दुर्जनों को दुष्टाचारण करने वालों को नहीं। (ङ) ईश्वर जीवों की अनेक प्रकार से रक्षा करते हैं उनमें एक प्रकार है-'सर्वोत्तम बुद्धि या सद्-बुद्धि को प्रदान करके'। सद्-बुद्धि मिलने पर मनुष्य अच्छे कर्मो, अच्छे स्वभावों व अच्छे गुणों को धारण करता है जिससे वह दु:खों से बच जाता है। (च) ईश्वर मनुष्यों से यह चाहते हैं कि वे ऐश्वर्यशाली, पुरुषार्थी, सत्याचारी, विद्वान बनें व सत्कीर्ति से युक्त हों।

- आर्यवन, रोजड़, पत्रा-सागपुर, जिला-साबरकांठा (गुजरात), फोन-02770-287418, 287518

आर्य समाज स्थापना दिवस

क्यों न मैं, तेरे गीत गाँऊ....... माँ आर्य समाज
मेरे जीवन में, तेरे कारण से, यह सुन्दर प्रातः आया।
मेरा पथ, तेरे ही पुण्यलोक से, यों है जगमगाया।
तेरे जैसी ममतामयी माँ कोपा.....
क्यों न मैं, तेरे गीत गाँऊ....... माँ आर्य समाज
ज्ञान का अमृत पिलाकर, मृत्यु के भय से, निराशा से तूने मुझे उबारा।
पग थिरकते चल पड़ेगाँ, जब-जब दिया तूने मुझे अपना सहारा।
वैदिक सत्संग को पाकर, क्यों न आत्मिक शान्ति को पाऊँ मैं माँ...
क्यों न मैं, तेरे गीत गाँऊ....... माँ आर्य समाज
मेरे मुरझाए उपवन में, जो यह बसन्त आया, सब तेरी कृपा से ही आया।
पुष्प ने यदि गन्ध को पाया, वह भी तेरी ही असीम अनुकम्पा से आया।
आज मैं सर्वस्व देकर भी, कहाँ और कैसे यह तुम्हारा ऋण चुकाऊँ माँ
क्यों न मैं, तेरे गीत गाँऊ....... माँ आर्य समाज

- राजेन्द्र आर्य, त्रिनगर, दिल्ली-35, मो. 8860082751

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

हवन करिए, सेहत की हजारों नियामत पाइए

❑ योगेश मिश्र

कल तक यज्ञ-हवन को आध्यात्मिक बताकर तमाम नास्तिकों द्वारा सिरे से खारिज कर देने वालों को अब स्वस्थ्य जीवन और प्रदूषणमुक्त वातावरण के लिए यज्ञ और हवन की शरण में जाना ही पड़ेगा। यह अब केवल ऋग्वेद में उल्लिखित प्राचीन सत्य ही नहीं है बल्कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे 21 वीं शताब्दी में परिक्षण की कसौटी पर कस कर फायदेमंद साबित कर दिखाया है। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों ने इस सत्य के पक्ष में वर्ष 2007 में तथ्य और प्रमाण जुटाए पर अग्निहोत्र के नाम पर बीते छह दशक से आहुतियों के असर का प्रयोग अनवरत जारी है। दूसरी ओर सिद्धार्थनगर जनपद में वेद विद्यापीठ चला रहे तेजमणि त्रिपाठी एक दशक से लोगों को यज्ञ और हवन से लाभ तो दिला ही रहे हैं साथ ही साथ आहुतियों और हवन के असर का अहसास कराने में जुटे हुए हैं।

लखनऊ स्थित राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) के वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र में काफी काम किया है। हरिद्वार के गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के सहयोग से उन्होंने बीते साल हरिद्वार में हवन कार्य की सहायता से यह निष्कर्ष जुटाने में कामयाबी पाई है कि वायुमंडल में व्याप्त 94 फीसदी जीवाणुओं को सिर्फ हवन द्वारा नष्ट किया जा सकता है। इतना ही नहीं एक बार हवन करने के बाद तीस दिन तक उसका असर रहता है। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों चन्द्रशेखर नौटियाल कहते हैं हवन के माध्यम से बीमारियों से छुटकारा पाने का जिक्र ऋग्वेद में भी है। करीब दस हजार साल पहले से भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी हवन की परंपरा चली आ रही है जिसके माध्यम से वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाया जा सकता है। एनबीआरआई के दो अन्य वैज्ञानिक पुनीत सिंह चौहान और यशवंत लक्ष्मण नेने ने भी डॉ. नौटियाल के साथ हवन के स्वास्थ्य और वातावरण पर प्रभाव पर शोध किया है। इनके लंबे-चौड़े शोध प्रबंध का छह पेज का सार यह बताता है कि हवन में बेल, नीम और आम की लकड़ी, पलाश का पौधा, कलीगंज, देवदार की जड़ गूलर की छाल और पत्ती, पीपल की छाल और तना, बेर, आम की पत्ती और तना, चंदन की लकड़ी, तिल, जामुन की कोमल पत्ती, अश्वगंधा की जड़ तमाल यानि कपूर, लौंग, चावल, जौ, ब्राह्मी, मुलैठी की जड़, बहेड़ा का फल और हर्रे के साथ-साथ तमाम औषधीय और सुगंधित वनस्पतियों को डालकर बंद कमरे में हवन करने से 94 फीसदी जीवाणु मर जाते हैं। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों ने हवन का प्रभाव भले ही छः वर्ष पहले साबित करने में कामयाबी पाई हो लेकिन तकरीबन छह दशकों से अधिक समय से महाराष्ट्र के शिवपुर जिले के वेद विज्ञान संस्थान के लोग अग्निहोत्र पात्र में हवन को वातावरण को प्रदूषणमुक्त बनाने के साथ-साथ अच्छी सेहत के लिए जरूरी बताते चले आ रहे है। संस्थान के निदेशक डा. पुरुषोत्तम राजिम वाले ने बातचीत में कहा, साठ-सत्तर देशों में हम लोग हवन के फायदे का प्रचार कर चुके हैं। परमसदगुरु श्री गजानन महाराज ने विश्व भर में हवन का महत्व बताने के लिए यह अभियान शुरू किया था लेकिन अब माइक्रोबायलॉजी से जुड़े तमाम वैज्ञानिक ही नहीं कृषि वैज्ञानिक भी अपने शोधों के माध्यम से यह साबित करने में कामयाब हुए हैं कि हवन से सेहत और वातवरण के साथ-साथ कृषि की उपज को भी बढ़ाया जा सकता है। माइक्रोबायलॉजी के वैज्ञानिक डॉ. मोनकर ने हवन के प्रभावों के अध्ययन के बाद यह साबित करने में कामयाबी पाई है कि हवन के बाद जो वातावरण निर्मित होता है उसमें विषैले जीवाणु बहुगुणित नहीं हो पाते और बेअसर हो जाते हैं। एसटाईप नाम प्राणघातक बैक्टीरिया हवन के बाद के वातावरण में सक्रिय ही नहीं रह पाता। इतना ही नहीं, वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान के लोगों की मानें तो दिल्ली में रक्षा मंत्रालय के शोध एवं विकास विंग के कर्नल गोनोचा और डॉ. सेलवराज ने भी साबित किया है कि हवन में शामिल लोगों के नशे की लत भी दूर की जा सकती है। मन मस्तिष्क में सकारात्मक भाव और विचारों का प्रादुर्भाव होता है। पूना विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के वैज्ञानिक डॉ. भुजबल का कहना है, 'अग्निहोत्र' देने से जैविक खेती की उपज बढ़ने के भी प्रमाण मिले है। एनबीआरआई के वैज्ञानिकों ने हवन का जो प्रयोग किया उसमें मंत्रोच्चारण नहीं किया गया। हालांकि वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान के लोगों ने अग्निहोत्र को धार्मिक रीतियों-पद्धतियों का भी जामा पहना रखा है। वे अग्निहोत्र सूर्यास्त एवं सूर्योदय के समय करने को कहते हैं। इनके हवन के लिए गाय के गोबर के कंडे, बिना कुमकुम हल्दी के सादे चावल, पांच-छह बूंद गाय की घी के साथ ही सूर्यास्त के समय सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदम् न मम उच्चारित करना होता है जबकि सूर्योदय के समय अग्नये स्वाहा, अग्नये इदम् न मम तथा प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदम् न मम का पाठ करते हुए तांबे के बने हुए पिरामिड आकार के अग्निहोत्र पात्र में आहुति दी जाती है।

पुरुषोत्तम राजिम बताते है कि परम कम्प्यूटर बनाने वाली वैज्ञानिकों की टीम के वैज्ञानिक डॉ. भटकर ने भी हवन के वैज्ञानिक प्रभाव को स्वीकार किया है। इतना ही नहीं, उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल इलाके में गुरुकुल परंपरा के आधार पर वेद विद्यापीठ चला रहे तेजमणि त्रिपाठी किसी को भी हवन से प्राप्त होने वाले लाभ का अहसास कराने के लिए तमाम तरह के उपाय रोज-ब-रोज करते हैं। तेजमणि त्रिपाठी बताते हैं, हमारे यहां यज्ञ से पानी बरसा लेने की तमाम मिसालें मिलती हैं। सोम यज्ञ में जिस सोमलता नाम की औषधि से यज्ञ होता है उसके धुएं से प्राण में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। सोमलता का रसपान करने से नपुंसकता दूर होती है। संजीवनी यज्ञ में प्रयोग हाने वाले गिलोय यानी नीम के गुच्छ तथा घी आदि से तमाम असाध्य रोगों से निजात मिलती है।'

त्रिपाठी हवन का प्रभाव दिखाने के लिए हमेशा तैयार मिलते हैं। उनकी सलाह है कि यदि आप भी अपने घर में हवन का असर देखना चाहते है तो नागर मोथा, कपूर, कथली, सुगंध लाला, सुगंध मंत्री, सुगंध कोकिला, इंद्र जौ, जटामासी गुग्गल तथा बरगद की जड़ को मिलाकर घर में हवन करके देख सकते हैं। (साभार... संडे नई दुनिया पत्रिका)

आप प्रसन्न हैं या नहीं यह सोचने के लिए फुर्सत होना ही दुःखी होने का रहस्य है और इसका उपाय है-व्यस्त रहो।

રામ અને રામાયણની વિશ્વફલક પર લોકપ્રિયતા

પ્રસ્તુત લેખ ઇન્ટરનેટ અને સંદર્ભ ગ્રંથ ***'वैदिक युग एवं रामायण काल की ऐतिहासिकता'*** અને વાલ્મિકી રામાયણ, પુરાણ તથા અન્ય શોધપત્રો પરથી સમ્પાદિત છે. લેખનો હેતુ રામાયણની વિશ્વ લોકપ્રિયતા સિદ્ધ કરવાનો છે, લેખમાં કેટલાક સ્થળ પર વૈદિક માન્યતાથી વિરુદ્ધ હોઈ શકે છે. **(લેખાંક ૨ જો)**

રમેશ મહેતા 'ટંકારામિત્ર'

ગયા અંકથી આગળ

થાઈલેંડનું પ્રાચીન નામ સ્યામ હતું અને એનું પ્રાચીન નગર દ્વારાવતી (દ્વારિકા) હતું. થાઈ સમ્રાટ રામાતિબોદીએ ઇ.સ. ૧૩૫૦માં પોતાની રાજધાનીનું નામ અયુધ્યા (અયોધ્યા) રાખ્યું, જ્યાં ૩૩ હિન્દૂ રાજાઓએ રાજ્ય કર્યું.

થાઈલેંડમાં લોપબુરી (લવપુરી) નામનો એક પ્રાંત છે. ત્યાં વાંગ-પ્ર નામના સ્થળની નજીક ફાલી (વાલિ) નામની એક ગુફા છે. કહેવાય છે કે બાલિએ આજ ગુફામાં થોરફી નામના મહિષનો વધ કર્યો હતો.

પ્રશાંત મહાસાગરના પશ્ચિમી કીનારે આધુનિક વિયેટનામનું પ્રાચીન નામ ચંપા છે. થાઈવાસિઓની જેમ ત્યાંના લોકો પણ પોતાના દેશને રામની લીલાભૂમિ માને છે. એમની માન્યતાની પુષ્ટિ ૭મી શતાબ્દીના એક શિલાલેખ પરથી થાય છે, જેમાં વાલ્મિકી મન્દિરનો ઉલ્લેખ છે, જેનું પુનર્નિર્માણ પ્રકાશધર્મ (૬૫૩-૬૭૯) નામના સમ્રાટે કરાવ્યું હતું. શિલાલેખ પણ અનોખો છે, કારણ કે વાલ્મિકીની જન્મભૂમિ ભારતમાં પણ એમના કોઈ પ્રાચીન મંદિરના અવશેષ જોવા નથી મળતા.

વિયેટનામના બોચાન નામની જગ્યાએથી એક ક્ષતિગ્રસ્ત શિલાલેખ મળ્યો છે, જેના પર સંસ્કૃતમાં *'लोकस्य गतागतिम्'* લખાયેલું છે. બીજી કે ત્રીજી શતાબ્દીમાં ખોદાયેલ આ ઉદ્ધરણ રામાયણના અયોધ્યાકાંડના એક શ્લોકનું અંતિમ ચરણ છે. સંપૂર્ણ શ્લોક આમ છે –

क्रुद्धमाज्ञाय रामं तु वसिष्ठः प्रत्युवाचह। જાબાલિરપિ જાનીતે લોકસ્યાસ્યગતાગતિમ્॥

અર્થાત્ વિયેટનામના ત્રા-કિઉ નામના સ્થળે પ્રાપ્ત બીજો શિલાલેખ પણ ક્ષતિગ્રસ્ત છે. એ પણ ચંપાના રાજા પ્રકાશધર્મે કોતરાવ્યો હતો, એમાં વાલ્મિકીનો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે.

क्वेराधस्य महर्षे वाल्मीकि। पूजा स्थानं पुनास्तास्यकृत:॥

અર્થાત્ : તાત્પર્ય એ છે કે મહર્ષિ વાલ્મીકિનું એક પ્રાચીન મન્દિર હતું જેનો પુનરોદ્ધાર પ્રકાશ ધર્મએ કરાવ્યો.

રામની વંશ પરંપરા:- રામ થયા છે એ વાતની સાબિતી છે કે એમની વંશપરંપરા જોવા મળે છે. વંશ પરંપરા કોઈ કથાના કાલ્પનિક પાત્રની હોતા જ નથી. આ એવી વંશાવલી છે જેમના વંશજો બીજા ધર્મના પણ ઐતિહાસિક પુરુષ માનવામાં આવે છે તેમ છતાં જેમનું પોતાનું અલગ અસ્તિત્ત્વ પણ છે.

રામાયણના બાલકાંડમાં ગુરુ વસિષ્ઠજી દ્વારા રામના કૂળનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, જે આમ છે – બ્રહ્માજીને ત્યાં મરીચિનો જન્મ થયો. મરીચિનો પુત્ર કશ્યપ થયો. કશ્યપને ત્યાં વિવસ્વાન અને વિવસ્વાનને ત્યાં વૈવસ્વત મનુ જનમ્યા. વૈવસ્વત મનુના સમયમાં પ્રલય થયો હતો. વૈવસ્વત મનુને ત્યાં દસ પુત્ર (ઇલ, ઇક્ષ્વાકુ, કુશનામ, અરિષ્ટ, ધૃષ્ટ, નરિષ્યન્ત, કરુષ, મહાબલી, શર્યાતિ અને પૃષધ) જનમ્યા. ઇક્ષ્વાકુ પ્રાચીન કૌશલ દેશના રાજા હતા અને એમની રાજધાની અયોધ્યા હતી.

ઇક્ષ્વાકુને ત્રણ પુત્ર હતા – કુક્ષિ, નિમિ અને દંડક. ઇક્ષ્વાકુના પ્રથમ પુત્રનું નામ વિકુક્ષિ હતું. ઇક્ષ્વાકુના પહેલા પુત્ર કપક્ષિના પુત્રનું નામ વિકુક્ષી હતું. વિકુક્ષીનો પુત્ર બાણ, બાણનો પુત્ર અનરણ્ય, અનરણ્યને ત્યાં પૃથુ, પૃથુને ત્યાં ત્રિશંકુ, ત્રિશંકુનો પુત્ર ધુંધુમાર થયો, ધુંધુમારના પુત્રનું નામ યુવનાશ્વ, યુવનાશ્વને ત્યાં માંધાતાનો, માંધાતાને ત્યાં સુસન્ધિનો. સુસન્ધિને બે પુત્ર જનમ્યા – ધ્રુવસન્ધિ અને પ્રસેનજિત. ધ્રુવસન્ધિનો પુત્ર ભરત થયો.

ભરતને અસિત અસિતને ત્યાં સગરનો જન્મ થયો. સગર અયોધ્યાના પ્રતાપી રાજા હતા. સગરના પુત્રનું નામ અસમંજ હતું. અસમંજનો પુત્ર અંશુમાન, અંશુમાનને ત્યાં દિલીપનો જન્મ થયો. દિલીપને ત્યાં ભગીરથનો જન્મ થયો. ભગીરથે જ ગંગાને પૃથ્વી પર ઊતારી હતી. ભગીરથનો પુત્ર કકુસ્ત્થ અને કકુત્સ્થને ત્યાં રઘનો જન્મ થયો. રઘુ અત્યન્ત તેજસ્વી અને પરાક્રમી નરેશ હોવાને કારણે એનો વંશ રઘુવંશના નામે પ્રસિદ્ધિ પામ્યો. એટલે રામનું કુળ રઘુકુળ નામે પ્રસિદ્ધ છે.

રઘુનો પુત્ર પ્રવૃદ્ધ થયો. પ્રવૃદ્ધનો પુત્ર શંખણ, શંખણનો પુત્ર સુદર્શન, સુદર્શનના પુત્રનું નામ અગ્નિવર્ણ હતું. અગ્નિવર્ણના પુત્ર શીઘ્રગ, શૂઘ્રગના પુત્ર મરુ થયા. મરુના પુત્ર પ્રશુશ્રુક, પશુશ્રુકનો પુત્ર અમબરીષ, અમ્બરીષના પુત્રનું નામ નહુષ હતું. નહુષનો પુત્ર યયાતિ, યયાતિના પુત્ર નાભાગ થયા. નાભાગના પુત્રનું નામ અજ હતું. અજના પુત્ર દશરથ થયા અને દશરથના આ ચાર પુત્ર રામ, ભરત, લક્ષ્મણ તથા શત્રુઘ્ન છે. વાલ્મીકિ રામાયણ॥ ૧-૫૯ થી ૭૨॥

સોનાની લંકા: શ્રીલંકામાં એ સ્થળ શોધી લોવાયુ છે, જ્યાં રાવણની સોનાની લંકા હતા. એવું માનવામાં આવે છે કે જંગલોની વચ્ચે રાનાગિલની વિશાલકા પહાડ પર રાવણની ગુફા છે, જ્યાં એણે તપસ્યા કરી હતી. રાવણના પુષ્પક વિમાનના ઉતરવા ના સ્થળને પણ શોધી લેવામાં આવ્યું છે.

શ્રીલંકાના ઇંટરનેશનલ રામાયણ રિસર્ચ સેંટર અને ત્યાંના પર્યટન મંત્રાલયે મળીને રામાયણ સાથે જોડાયેલા એવા `.૦ સ્થળ શોધ્યા છ જેનું પુરાતાત્ત્વિક અને ઐતિહાસિક મહત્ત્વ છે અને જેનો ઉલ્લેખ રામાયણમાં પણ જોવા મળે છે. શ્રીલંકા સરકારે 'રામાયણ'માં આવેલા લંકા પ્રકરણ સાથે જોડાયેલા તમામ સ્થલો પર શોધ કરાવીને એની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીને એ સ્થળોને પર્યટન કેન્દ્રના રૂપમાં વિકસિત કરવાની યોજના બનાવી છે. એના માટે ભારતની મદદ પણ માંગી છે.

વેરાંગટોક જે મહિયાંગનાથી ૧૦ કિલોમિટર દૂર છે, સીતાનું હરણ કર્યા પછી ત્યાં જ રાવણે પુષ્પક વિમાને ઉતાર્યું હતું. મહિયાંગના મધ્ય શ્રીલંકા સ્થિત નુવારા જિલ્લાનું પર્વતીય ક્ષેત્ર છે. ત્યારબાદ સીતા માતાને જ્યાં લઈ જવામાં આવ્યા હતા એ સ્થળનું નામ ગુરૂલપોટા છે જે અત્યારે 'સીતોકોટુવા' નામથી પ્રસિદ્ધ છે. આ સ્થળ પણ મહિયાંગનાની નજીક છે.

એલિયા પર્વતીય ક્ષેત્રની એક ગુફામાં સીતા માતાને

રાખવામાં આવ્યા હતા જ 'સીતા એલિયા'ના નામે ઓળખાય છે. અત્યારે ત્યાં સીતા માતાના નામનું મંદિર પણ છે. તદોપરાંત બીજા પણ ઘણા સ્થાનં શ્રીલંકામા જોવા મળે છે, જેનું ઐતિહાસિક મહત્ત્વ છે.

રામસેતુને બચાવવાની આવશ્યક્તા: ભારતની દક્ષિણે ધનુપકોટિ તથા શ્રીલંકાની ઉત્તર-પશ્ચિમે પમ્બનના મધ્ય સમુદ્ર માં ૪૮ કિ. મિ. પહોલી પટ્ટીના રૂપમાં ઉભરેલા એક ભૂ-ભાગના ઉપગ્રહથી ખેંચેલા ફોટાઓને અમેરિકાના અંતરિક્ષ અનુસંધાન (નાસા)એ ૧૯૯૩માં દુનિયાભરમાં પ્રસારિત કર્યા અને એનું નામ આપ્યું 'એડમ બ્રિજ'. ઈસાઈ માન્યતા મુજબ આ 'એડમ બ્રિજ' છે.

જળ-વાયુ પરિવર્તન ઉપર અંતર: સરકારી પેનલ (નાસા પરિવર્તન માસ્ટર નિર્દેશિકા) દ્વારા કરવામાં આવેલ અનુમાન મુજબ છેલ્લા ૯,૦૦૦ વર્ષોમાં સમુદ્રના તળીયાનું લેવલ લગભગ ૨.૮ મિટર એટલે કે ૯.૩ ફૂટ વધ્યુ છે. વર્તમાનમાં રામસેતુના અવશેપ સમુદ્રના તળીયેથી લગભગ એટલી જ ઊડાઈયે જોવા મળ્યા છે. આમ સ્પષ્ટ છે કે પૂર્વે આ સેતુનો ઊપયોગ ભૂમિ માર્ગના રૂપે કરવામાં આવતો હતો. હજારો વર્ષ પહેલા માનવ દ્વારા નિર્મિત સેતુનું આ એક માત્ર ઉદાહરણ છે.

રામસેતુના વિપયે પ્રાચીન સમયથી જ લોકો જાણતા હતા પરંતુ ૨૦૦૫માં આના ઉપર વિવાદ ઊભો થયો જ્યારે ૨૦૦૫ માં ભારત સરકારે સેતુસમુદ્રમ પરિયોજનાની જાહેરાત કરી. ભારત સરકાર સેતુસમુદ્રમ યોજના અન્તર્ગત તામિલનાડુને શ્રીલંકા સાથે જોડવાનું કામ કરી રહી છે. આનાથી વ્યાપારિક લાભ થવાની વાત કરાઈ રહી છે. પરંતુ આ પરિયોજના પૂરી ત્યારે થશે જ્યારે રામસેતુને તોડવામાં આવે. વિપય કોર્ટમાં હોવા છતાં રામસેતુનો મોટો ભાગ તોડી નખાયો છે.

રામકથાના લેખક: નરેનદ્ર કોહલીના કહેવા પ્રમાણે સરકાર એવો ખોટો પ્રચાર કરી રહી છે કે રામે પાછા ફરતી વખતે સેતુ તોડી નાખ્યો હતો. રામાયણ પ્રમાણે રામ લંકાથી વાયુયાનમાં પાછા ફર્યા હતા, તો વિચાર કરો તેઓ સેતુ કઈ રીતે તોડાવી નંખાવાના હતા. રામાયણમાં સેતુ નિર્માણનું જેટલું જીવંત અને વિસ્તૃત વર્ણન જોવા મળે છે એની કલ્પના પણ થઈ શકે તેમ નથી. આ સેતુ કાળાંતરમાં સમુદ્રી તોફાનો વિગેરેની થપાટો ખાઈને તૂટી ગયો હતો પણ એના અસ્તિત્ત્વને નકારી શકાય તેમ નથી.

લાલ બહાદુર શાસ્ત્રી વિદ્યાપીઠના લેકચરર ડૉ. રામ સલાઈ દ્વિવેદીનું કહેવું છે કે વાલ્મિકી રામાયણ ઉપરાંત કાલિદાસે રઘુવંશના ૧૩માં સર્ગમાં રામના આકાશ માર્ગેથી પાછા ફરવાનું વર્ણન જોવા મળે છે. આ સર્ગમાં રામ દ્વારા સીતાને રામસેતુ બતાવવાનું વર્ણન પણ જોવા મળે છે, એટલે એમ કહેવું કે રામે લંકામાંથી પાછા ફરતી વખતે સેતુ તોડી નાખ્યો હતો એમ કહેવું ખોટું છે.

વાલ્મિકી રામાયણમાં વર્ણન છે કે પુલ લગભગ ૫ દિવસમાં બની ગયો હતો, જેની સંબાઈ એકસો યોજન અને પહોળાઈ દસ યોજન હતી. રામાયણમાં આ પુલને 'નળસેતુ' નામ આપવામાં આવ્યું છે. નળની દેખરેખમાં વાનરોએ ખૂબ જ પ્રયત્ન પૂર્વક આ સેતુનું નિર્માણ કર્યું હતું. (વાલ્મિકી રામાયણ ૬.૨૨.૭૬)

વાલ્મિકી રામાયણમાં એવા ઘણા પ્રમાણ છે કે સેતુ બનાવવા માટે ઉચ્ચ યાન્ત્રિક સાધનોનો ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો. કેટલાક વાનરો મોટા મોટા પર્વતોને યન્ત્રો દ્વારા સમુદ્ર તટ પર લઈ આવ્યા હતા. કેટલાક વાનરો એકસો યોજન લાંબુ સૂત (મેજરટેપ) પકડીને ઊભા હતા અર્થાત્ સેતુનું નિર્માણ સૂતની સીધમાં થઈ રહ્યું હતું. (વાલ્મિકી રામાયણ ૬.૨૨.૬૨).

ગીતા પ્રેસ ગોરખપુરમાં છપાયેલ શ્રીમદ્વાલ્મિકીય રામાયણ કથા 'સુખ સાગર'માં વર્ણન છે કે રામે સેતુના નામકરણ સમયનું નામ 'નળ સેતુ' રાખ્યુ હતું. એનું કારણ છે કે લંકા સુધી પહોંચવા માટે નિર્મિત સેતુનું નિર્માણ વિશ્વામિત્રજીના પુત્ર નળે બનાવેલ યોજના પ્રમાણે સમ્પન્ન થયું હતું. મહાભારતમાં પણ રામના નળ સેતુની ચર્ચા જોવા મળે છે.

અન્ય ગ્રંથોમાં કાલિદાસના રઘુવંશમાં સેતુનું વર્ણન છે. સ્કંદ પુરાણ (તૃતીય ૧.૨.૧-૧૧૪), વિષ્ણુ પુરાણ (ચતુર્થ ૪.૪૦.૪૯)માં, અગ્નિ પુરાણ (પંચમ - એકાદશ) અને બ્રહ્મ પુરાણ (૧૩૮. ૧-૪૦)માં પણ શ્રી રામના સેતુની ચર્ચા જોવા મળે છે.

ગોવાના રાષ્ટ્રીય સમુદ્ર વિજ્ઞાન સંસ્થાન (એન.આઈ.ઓ.) માં ભુ-વૈમાનિક સમુદ્ર વિજ્ઞાન વિભાગની પ્રાચીન જળવાયુ પરિયોજનાના અધ્યક્ષ અને વરિષ્ઠ વૈજ્ઞાનિક ડૉ. રાજીવ નિગમે પણ ઉપરોક્તની પુષ્ટિ કરી છે. એમણે છેલ્લા પંદર હજાર વર્ષ દરમ્યાન સમુદ્રના તળીયે આવેલા ઉતાર-ચઢાવ અને એના કિનારાઓ પર વસેલ માનવ વસ્તિઓ પર એના પ્રભાવ પર પ્રકાશ નાખ્યો છે. એમના કહેવા પ્રમાણે ૭,૫૦૦ અને ત્યાર પછીથી જળમગ્ન થયેલા કે તત્પશ્ચાત્ ભૂમિથી ઘોરાયેલા કેટલાય તટવર્તી પરાતાત્ત્વિક સ્થળોના અસ્તિત્ત્વની જાણકારી મળી છે. એમાં હજીરા, ધોળાવીરા, જૂની કુરન, સુરકોટડા, પ્રભાસ પાટણ અને દ્વારિકા આદિનો સમાવેશ થાય છે.

રાજીવ નિગમના મત મુજબ સમુદ્રનું જલસ્તર ૭ હજારથી ૭ હજાર (૫૦૦૦ થી ૫૨૦૦ ઇ.સ. પૂર્વે૨૦૦) લગભગ વર્તમાનના સ્તર કરતા લગભગ ૩ મિટર ઊંડે હતું. વર્તમાનમાં રામસેતુ લગભગ આટલા જ પાણીમાં ડૂબેલો છે.

જુનાગઢ આર્યસમાજની ગતિવિધિ

જુનાગઢના સંસ્કૃતિ પ્રેમી અને સેવાભાવી મહાનુભાવ શ્રી ભૂપતબાપા શાહ આર્યસમાજ જુનાહગઢની મુલાકાતે આવ્યા હતા. સમાજના મંત્રી શ્રી કાન્તિભાઈ કીકાણીએ તોમનું સ્વાગત કરીને આર્યસમાજનો પરીચય આપીને વાલ્મિકી રામાયણ, સત્યાર્થપ્રકાશ, દયાનન્દ જીવન-ચરિત્ર, વેદભાષ્યો અને ઋગ્વેદાદિ ભાષ્યભૂમિકા જેવા આર્ષ ગ્રન્થ ભેટ આપ્યા હતા.

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में
महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
प्रवेश प्रारम्भ

विद्यालय में दो प्रकार के पाठ्यक्रम हैं।

❑ **प्रथम पाठ्यक्रम** महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवी कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है।

❑ **द्वितीय पाठ्यक्रम** में उपदेशक कक्षाएं चलती हैं। जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकांड विशेष रूप से सिखा कर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए जून 2014 के प्रथम सप्ताह तक आचार्य जी से पत्र-व्यवहार से जानकारी प्राप्त करें।

सम्पर्कः आचार्य रामदेव शास्त्री पो. ता. टंकारा, जि. राजकोट (गुजरात) पिन. 363650

नवसस्येष्टि पर्व सम्पन्न

वर्तमान की होली प्राचीन कालीन वैदिक आग्रापनेष्टि का परिवर्तित रूप है। इस दिन अर्द्ध पक्व अन्न की यज्ञों में आहुति दी जाती थी जिसे होला कहा जाता था। आचार्य अग्निमित्र ने आर्य समाज रेलवे कॉलोनी कोटा जंक्शन में आयोजित त्रिदिवसीय नवसस्येष्टि पर्व के समापन के अवसर पर कही। वैदिक विद्वान हरीशचन्द विद्यावाचस्पति ने कहा कि ऋषिकृत वेदभाष्य हमारी सर्वोत्तम निधि है। इस अवसर पर पं. बिरधीचन्द के पौरहित्य में नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि आर्य समाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा थे।

प्रवेश प्रारम्भ
आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल,

दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,

फोन : 01495-270503, मो. 09416747308

दयानन्द जन्मदिवस आयोजित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़ के पावन प्रांगण में आर्यसमाज बल्लभगढ़ के तत्वावधान में आर्यसमाज संस्थापक युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द का जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर सप्तकुंडीय महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया, इस महायज्ञ में विद्यालय के लगभग 1200 छात्र-छात्राओं ने यज्ञ में आहुति देकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। प्रधानाचार्य वी.के. चोपड़ा ने कहा महर्षि दयानन्द ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों के प्रचार-प्रसार और देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा में लगाया।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में

आवश्यकता

❑ कक्षा 8, 9 एवं 10 में हरियाणा प्रान्त के पाठ्यक्रम से गणित एवं विज्ञान पढ़ाने की क्षमता रखने वाले योग्य अध्यापक की आवश्यकता है।

❑ हरियाणा प्रान्त के पाठ्यक्रम से अथवा गुरुकुलीय पाठ्यक्रम से अंग्रेजी पढ़ाने वाले योग्य अध्यापक की आवश्यकता है।

सम्पर्क करेः-आचार्य रामदेव जी

डाकः- टंकारा, जि. मोरबी, पिन. 363650 (गुजरात)

प्रिं. चित्रा नाकरा जी "एक्सप्रेशन इण्डिया" द्वारा सम्मानित

शिक्षा, समाज सेवा, कला एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्द्धन में विशेष योगदान प्रदान करने के कारण आर्य समाज की प्रधाना एवं **वेदव्यास डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल विकासपुरी** की प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा नाकरा जी को "एक्सप्रेशन इण्डियां" नामक प्रख्यात संस्था ने 'नेशनल साईंस सेन्टर नई दिल्ली' में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया, इस अवसर पर देश के जाने माने शिक्षाविद, प्रख्यात् दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाज-सेवी तथा अनेकों छात्र उपस्थित थें। प्रिं. नाकरा जी का शिक्षा में नवीन प्रयोग धर्मिता, नैतिक मूल्यों के संरक्षण, संवर्द्धन, बाल मनोविज्ञान, सेवा, स्वास्थ्य, सह-अस्तित्व कला, संस्कृति के उन्नयन, चरित्र एवं व्यक्तित्त्व निर्माण शिविर "आध्यात्मिक चेतना सम्मेलन" तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान रहा है। 'एक्सप्रेशन इण्डिया' के अध्यक्ष एवं अन्य प्रबुद्ध जनों ने प्रिं. चित्रा नाकरा जी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रिं. नाकरा ने कहा- "यह सम्मान आर्य समाज के दिव्य विचारों तथा गौरवशाली डी.ए.वी. संस्था के प्रेरणाप्रद संस्कारों एवं प्रोत्साहन का ही परिणाम है, जो हमें हमेशा आगे बढ़ने का साहस और कुछ नया कर गुजरने का हौसला देता है।" यह व्यक्तिगत रूप से मेरा नहीं वरन समस्त आर्यसमाजों एवं डी.ए.वी. संस्थाओं का सम्मान है।

सफलता के सोपान पर अग्रसर 'गुरुकुल चोटीपुरा'

'गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली' एक आदर्श एवं उत्कृष्टतम शिक्षा-प्रणाली है, जो मानव की सर्वांगीण उन्नति का प्रमुख आधारस्तम्भ है। भारत के लगभग 16 प्रान्तों की 626 छात्राएँ 'कन्या गुरुकुल चोटीपुरा' के सादगीपूर्ण व सात्विक वातावरण में विद्याभ्यास व व्रताभ्यास करती हुई शैक्षिक एवं क्रीड़ाक्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। उपलब्धियों का विवरण निम्न प्रकार है-शैक्षिक उपलब्धियाँ: सभी छात्राओं का वार्षिक परीक्षा-2013 का उत्तीर्णांक शत-प्रतिशत रहा तथा प्राय: सभी ने 70 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। 60 प्रतिशत छात्राओं ने 70-80 प्रतिशत की अंकोपलब्धि द्वारा 'वरीयता सूची' में स्थान प्राप्त किया। - वर्ष 2013 में गुरुकुल की सुयोग्य छात्रा ब्र. ऋतेशा ने 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक' की 'शास्त्री' परीक्षा में तथा कु. किरण ने 'रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली की एम.ए. (संस्कृत) में स्वर्णपदक प्राप्त कर गुरुकुल को सम्मानित किया है। - इस सत्र में (मार्च 2014) में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में गुरुकुल की स्नातिका मोहिनी की 'संस्कृत-प्राध्यापिका' (Asst. Professor) के पद पर स्थायी नियुक्ति भी गुरुकुल के गौरव का एक कीर्ति-स्तम्भ है। - गुरुकुल की सुयोग्य स्नातिका कु. किरण तथा ज्योति ने जून 2013 में 'कनिष्ठ अध्येता शोधवृत्ति (JRF) प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है।- 25-28 फरवरी 2014 में 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान' द्वारा भोपाल में आयोजित '52वीं अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा' में गुरुकुल की छात्राओं ने उत्तम स्थान प्राप्त किए। - महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में 22 फरवरी 2014 में सम्पन्न 'भाषण-प्रतियोगिता' में गुरुकुलीन छात्रा कु. नेहा ने संस्कृत-भाषण में प्रथम तथा कु. दीपशिखा ने हिन्दी-भाषण में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

क्रीड़ा-क्षेत्र की उपलब्धियाँ-उत्तर प्रदेश तीरंदाजी प्रतियोगिता उझानी (बदायूं) में आयोजित की गई, जिसमें गुरुकुल की छात्राओं ने प्रतिभागिता करते हुए स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्राप्त किए। खेल-जगत् में गुरुकुल महाविद्यालय की छात्राओं ने धनुर्विद्या में राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर व्यक्तिगत तथा सामूहिक (टीम) रूप से अनेक उल्लेखनीय कीर्तिमान बनाए हैं। गुरुकुल की छात्राएँ अभी तक एथेन्स, इंग्लैण्ड, स्पेन, मलेशिया, थाइलैण्ड, बांग्लादेश, श्रीलंका, टर्की, मैक्सिको, चीन, दोहा आदि देशों में आयोजित ओलम्पिक, वर्ल्ड कप, एशियन आदि प्रमुख खेलों में प्रतिनिधित्व करती हुई अपनी प्रतिभागिता दर्ज करा चुकी हैं।

जन्मोत्सव सम्पन्न

आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का 47वां जन्मोत्सव **आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली** में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र शास्त्री जी ने आयुष्काम यज्ञ सम्पन्न कराया। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने अपनी विद्वता, शील स्वभाव, यशस्वी लेखन, नि:स्वार्थ समाज सेवा, मार्मिक प्रवचनों एवं उड़ीसा में गुरुकुल की स्थापना आदि के द्वारा देश-विदेश में अपनी यश-गन्ध बिखेरी है। इस कार्यक्रम में अनेक आर्यसमाजों एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी शास्त्री जी को जन्म दिवस की मंगल कामनाएं दीं।

पाखण्ड का विरोध

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा अस्पतालों एवं सार्वजनिक स्थानों पर टोने टोटके कर अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले कार्योंपर रोक लगाने के लिए जिला कलेक्टर महोदय कोटा का ज्ञापन सौंपा गया। आर्य समाज का एक प्रतिनिधि मण्डल जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में जिसमें कैलाष बाहेती, हरिदत्त शर्मा, सूरजमल त्यागी, जेएस. दुबे अरविन्द पाण्डेय, रामप्रसाद याज्ञिक, चन्द्रमोहन कुशवाह ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर में आयोजित नव संवत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि स्वतंत्रता सेनानी स्वामी कर्मवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'संसार को देने के लिए और मानव मात्र के कल्याण के लिए जो विचार आर्य समाज ने दिए वे अद्वितीय हैं। इसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने दलितों के उत्थान, नारी शक्ति का जागरण और वेदों की ओर लौटो का नारा दिया।

वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

दक्षिण अफ्रीका के स्टनबर्ग शहर में श्री दयानन्द शर्मा जी के निवास-स्थान पर गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ से पधारे तपोनिष्ठ, सन्तशिरोमणि पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में सामवेद-पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा उनके छ: पौत्रों चि. भारत, यश, केतन, वंश, संस्कार एवं ध्रुव का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। सभी गणमान्य आगन्तुकों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर संस्कारों के महत्व को जाना।

25 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा राजस्थान के प्रांगण में 25 कुण्डीय यज्ञ शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में आयोजित किया गया। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने बताया कि इस आयोजन में कक्षा 6 से 12 तक के 1600 छात्र-छात्राओं तथा शिक्षक शिक्षिकाओं ने वेद मन्त्रों से हवन कुण्ड में आहुतियां डाली। जिससे सम्पूर्ण वातावरण यज्ञमय हो गया। डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि यज्ञ एक श्रेष्ठ कर्म है इसे करने से संतुष्टी मिलती है। आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि देश में वैदिक संस्कारों को देने का सबसे बड़ा केन्द्र डी.ए.वी. संस्था है।

धर्म जागृति महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ाअफगान सहारनपुर ने अपने स्थापना दिवस के एक सौ सोलहवें वर्ष में आयोजित धर्म जागृति महोत्सव में सर्व प्रथम यज्ञ किया गया। इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता डॉ. धीरज कुमार आर्य ने कहा कि वेद का ज्ञान केवल आर्यों-हिन्दुओं के लिए ही नहीं है यह संसार के सभी मनुष्यों के लिए है। दिल्ली से पधारे प. श्यामवीर राघव जी ने ईश्वर भक्ति, राष्ट्रभक्ति एवं परिवारों में जीने की कला को भजनों के माध्यम से रखकर जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर सातवीं वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता की प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ विजेता को नकद इनाम एवं प्रज्ञाप्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के द्वारा गौभक्तों को शाल उढ़ा कर सम्मानित किया गया।

देने में है प्रसन्नता

एक बार एक विद्वान उपदेशक एक सभा में प्रवचन कर रहे थे। सभा में 100 के लगभग श्रोता उपस्थित थे। उस समय वे प्रसन्नता पर बोल रहे थे, तभी अचानक उपदेशक चुप हो गये और सभी को एक-एक गुब्बारा देते हुए बोले, "आप सभी गुब्बारे पर अपना नाम लिख दें।" जब सभी ने अपने नाम लिख दिए तो उपदेशक ने सभी गुब्बारे इकट्ठे किए और पास के एक कक्ष में छोड़ आए। इसके बाद उन्होंने सभी श्रोताओं से पांच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठाकर लाने को कहा। देखते ही देखते उस कक्ष में छीना-झपटी, अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सभी के चेहरों पर कठोरता दिखाई दे रही थी। पांच मिनट बीत गए लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नहीं ढूंढ पाया। अब उपदेशक ने धैर्य और शांति पूर्वक जिस व्यक्ति, जिसके नाम का गुब्बारा मिले उसे देने को कहा। एक मिनट के अंदर हर व्यक्ति के हाथ में उसका गुब्बारा था। विद्वान उपदेशक ने कहा, "बिलकुल, ऐसा ही हमारे जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता की तलाश में इधर से उधर बैचेनी से घूम रहा है जबकि यह नहीं जानता कि प्रसन्नता मिलेगी कहां? प्रसन्नता दूसरों से छीना-झपटी करने से नहीं, दूसरों को देने में छिपी रहती है। दूसरे को प्रसन्नता देकर तो देखिए, आपको खुद को प्रसन्नता मिल जाएगी। ढूंढने की आवश्यकता ही नहीं होगी। यही तो हमारे जीवन का उद्देश्य है। "वहां आए श्रोताओं के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी।

- अर्जुनदेव चड्ढा, 4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा-324005, मो. 094141-87428

पत्र दर्पण

जन्मोत्सव पर बधाई

"आप जियो हजारों साल-साल के दिन हो पचास हजार"

आर्य राष्ट्र के नव निर्माण के जनक, वैदिक संस्कृति के रक्षक, पुरुषार्थी सर्वहितैषी एवं सच्चे कर्मयोगी, सरल सात्विक एवं दैवीय सम्पदा से युक्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सदैव जागरूक एवं चरैवेति सुत्र को आचरण में परिणत कर अन्यों के लिए वरणीय पथ प्रशस्त करने वाले स्वनाम धन्य आर्य जगत के गौरव परमश्रद्धेय श्री रामनाथ जी सहगल के 90वे जन्म दिन पर बहुत-बहुत बधाई व परिवार को शुभकामनाएं। आपके सुखद-स्वस्थ व दीर्घायु जीवन के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप परिवार सहित जीवेम शरदः शतम्-अदीना स्याम शरदः शतम हों।

कर्मठ-निष्ठावान व्यक्तित्व के धनी-टंकारा समाचार पत्रिका के कुशल सम्पादक तथा आर्य जगत के महान कर्मयोगी प्रिय व सम्माननीय श्री अजय जी को परमात्मा सुदीर्घायु प्रदान करें यूँ ही महर्षि के सपनों को साकार करते रहें। वास्तव में आपके कार्य स्तुत्य हैं। पुनः मैं अपनी ओर से आर्य केन्द्रीय सभा परिवार की ओर से हृदय की समस्त शुभकामनाओं के साथ समस्त सहगल परिवार को बधाइयां प्रेषित करता हूँ। **- सोमनाथ, प्रधान, गुड़गांव**

❑❑❑

आपका नब्बे वां जन्म-दिवस, आर्य समाज, हनुमान रोड, दिल्ली में मनाया गया। अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं अपनी ओर से तथा अपनी आर्य समाज की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। आपको ज्ञात ही होगा कि जिस विद्यालय से आपने अपनी शिक्षा प्राप्त की, आर्य संस्कृति के संस्कारों को जीवन में स्थान दिया वह है-'कृपाराम एंग्लो वैदिक स्कूल भेरा' इस विद्यालय की स्थापना आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम जी की प्रेरणा से 1890 में हुई थी। यह जानकारी मुझे पंडित लेखराम जी की जीवनी पढ़ने से प्राप्त हुई कि वे 1890 में भेरा मियानी और पिंडदादनखान में वेद प्रचार यात्रा पर गए हुए थे। मैंने भी उसी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। मैं भी 1 मई 2014 में छियासी वर्ष का हो जाऊंगा। आपसे मेरा गुरु भाई होने के कारण अत्यन्त स्नेह है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप शतायु होवें तथा महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की सेवा करते रहें।

- सत्यपाल गांधी, अशोक विहार, दिल्ली

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मयूर विहार-1, दिल्ली का 31वां वार्षिक उत्सव समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें महिला सम्मेलन, चतुर्वेद शतक यज्ञ, भजन एवं वेद कथा तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका पधारे हुए आर्य जन ने बड़े ही उत्साहित एवं प्रेरित हुए। वेद कथा श्री पं. वेदपाल, बागपत मेरठ द्वारा प्रस्तुत की गई और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में डॉ. सुधीर कुमार आर्य, स्वामी प्रणवानन्द तथा विनय आर्य जी के ओजस्वी प्रवचन हुए जिनसे पधारी हुई आर्य जनता लाभान्वित हुई।

जीत और हार आपकी सोच पर ही निर्भर करते हैं,
मान लो तो हार होगी, और ठान लो तो जीत होगी।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण

वार्षिक शिविर–2014

दिनांक रविवार 1 जून से रविवार 8 जून, 2014

स्थानः ऋषि जन्मभूमि टंकारा में
सौजन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट
जिला–राजकोट (टंकारा) में आयोजित हो रहा है।

★ वीरांगना की आयु कम से कम 14 वर्ष हो । ★ ऋतु के अनुसार अपना बिस्तर, भोजन के बर्तन, टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें । ★ शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं । ★ शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु व पैसा साथ न लाएं । ★ शिविर के बीच में अभिभावक मिलने न आएं, इससे व्यवस्था खराब होती है। ★ शिविर शुल्क 200 रुपये प्रति शिविरार्थी होगा । ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 20 मई तक अवश्य करा लें, फोन द्वारा भी करा सकते है, ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके । ★ सभी शिविरार्थी 1 जून, 2014 रविवार, दोपहर 12 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जाएं । ★ अस्वस्थ कन्याएं एवं जो अपना कार्य स्वयं करने में असमर्थ हों, कृपया शिविर में भाग न लें ।

निवेदक

डॉ. उज्ज्वला आचार्या, साध्वी उत्तमा यति
प्रधान संचालिका,
मो. 8750482498 (दिल्ली), मो. 9672286863 (अजमेर)

मृदुला चौहान
संचालिका,
मो. 9810702760

क्षमा करना सीखे

क्षमा का अर्थ है–गलती, अपराध करने वाले को दण्ड दिए बिना ही छोड़ देना, माफ कर देना, बदला न लेना। पर इसके लिए उस अपराध के परिणाम, प्रभाव, नुकसान, परिस्थिति और व्यक्ति पर विचार करना जरूरी हो जाता है क्योंकि सामाजिक, व्यवहार में अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं, जब कोई व्यक्ति न चाहते हुए भी कोई अपराध, गलती कर बैठता है। वह जानबूझ कर ऐसा नहीं करता, अपितु अपने अधूरे ज्ञान के कारण या पूरी बात का पता न लगने के कारण या दूसरों के ऊपर विश्वास कर लेने से या कई बार अपनी अज्ञानता, अदूरदर्शिता, असावधानी, लापरवाही, आलस्य आदि के कारण गड़बड़ कर बैठता है। अंत में जब परिणाम सामने आता है तो वह व्यक्ति पश्चाताप करता है, कानों को हाथ लगाता है, आगे ऐसा न करने की बार–बार शपथ खाता है। इस प्रकार सच्चे दिल से पछतावा अनुभव करने वालों को माफ कर देना ही उचित होता है। ऐसी स्थिति में ही सामाजिक व्यवहार चलता है। इसी दृष्टि से ही स्मृति शास्त्रों में प्रायश्चित की चर्चा और विधान मिलता है। सामाजिक व्यवहार के कई क्षेत्रों में बड़े-छोटे का सम्बन्ध होता है जैसे कि परिवार में माता-पिता और बच्चे, विद्यालय में शिक्षक तथा शिष्य, कार्यालय या कारखाने आदि में अधिकारी एवं कर्मचारी आदि। ऐसे क्षेत्रों में यदि छोटा कोई अपराध करता है, तो उसको सदा दण्ड देने की जरूरत नहीं होती। अधिकतर माफ करना ही अधिक उचित होता है। और तभी वह व्यवहार चलता है। ऐसी स्थिति में कई बार दण्ड की अपेक्षा क्षमा का अधिक प्रभाव होता है हाँ, उसको यथापेक्षित सावधान कर देना चाहिए।

परिवार और समाज में रहते हुए अनेकों के साथ हम अनेकविध व्यवहार करते हैं। परस्पर के बर्ताव में अनेक बार कोई एक दूसरे से बड़ा होने के कारण या धन, सामाजिक सम्बन्ध आदि के कारण एक दूसरे से इस प्रकार के शब्द कहता है या ऐसा व्यवहार करता है जो सर्वथा अनुचित, असह्य होता है, वह स्थिति या व्यवहार उस समय जैसे कैसे बीत जाता है। दोनों के जीवनों में या स्थितियों में परिवर्तन आ जाता है। यदि पिछले व्यवहारों को स्मरण करके एक दूसरे से बदला लेने की सोचने लगें, तो कम से कम पारिवारिक सम्बन्ध कभी भी स्थिर न हो सकेंगे। यहाँ परस्पर क्षमा के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं रहता। इस ने तब मुझे यह कहा था, ऐसे वर्ता था, ऐसा सोच कर उस से बदला लेने की बात, भावना से कभी गुजारा नहीं चल सकता। कई बार बड़ों से भी गलती हो जाती है, उनके प्रति दण्ड या बदले की भावना जचती नहीं।

क्षमा शब्द का मूल अर्थ है–सहना (क्षमुष् सहने) जैसे कि हर व्यक्ति से यदा-कदा अनेक प्रकार के नुकसान होते हैं, पर कोई भी अपने आप को हर समय दण्ड नहीं देता, वह सब सहा जाता है। ऐसे ही जिस-जिस के साथ जितना-जितना अपनापन होता है, हम उनकी गलतियों को उतना-उतना सह लेते हैं। कोई बार हानि के अनुपात से अपनी शक्ति के अनुरूप सहते हैं।

हाँ, विशेष सामाजिक परिस्थितियों में, हानि की अधिकता में या दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव की दृष्टि से या उस अपराधी का जब दूसरों का उल्टा प्रभाव होता है तब उस अपराधी को क्षमा करना अनुचित होता है, चाहे वह सच्चे दिल से अपनी गलती को अनुभव करता हो। शत्रु या उस द्वारा किए जाने वाले कार्य अथवा युद्ध आदि की स्थिति में माफ करना सर्वथा असंभव होता है, पर ये विशेष अपवाद होते हैं। प्रतिदिन के जीवन के व्यवहार में तो क्षमा करना अत्यंत आवश्यक होता है। धरती का एक नाम क्षमा भी है, जैसे वह सब कुछ सहन करती है। ऐसे ही जीवन में व्यक्ति को बहुत कुछ सहने की अपेक्षा होती है। हाँ, जब कोई साधारण ढंग से धूलि में पैर न रखकर अनादर से रखता है, तो धूलि एकदम उसके सिर पर सवार हो जाती है, तब वह क्षमा नहीं करती।

श्री आर्यनेता रामनाथः सहगलः

(नवतिवर्षीयोऽयं जन्मोत्सवः)

स्थानम्-आर्यसमाजस्य सभागारः, 15, हनुमान रोड, नव दिल्ली दिनांक-13 मार्च 2014 (गुरुवासरः, सायंकालः)

❑ आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

आर्यनेता 'रामनाथः', ऋषिभक्तः नरोत्तमः।
कर्मयोगी सुवक्ताच, सर्वप्रियः सुशोभते॥

भावार्थ-श्री आर्यनेता 'रामनाथ सहगल' महर्षि दयानन्द सरस्वती के परमभक्त, नरों में श्रेष्ठ, कर्मयोगी, ओजस्वी वक्ता और सब आर्यजनों के प्रिय (इस समारोह में) सुशोभित हो रहे हैं।

महर्षेः जन्मभूमिस्तु, कर्मभूमिः सदा मम।
टंकारा-ट्रस्ट-सचिवः, सर्वजन-संयोजकः॥

भावार्थ- महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मस्थली ही श्री रामनाथ सहगल की सच्ची कर्मभूमि है। जो टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री के रूप में लाखों आर्यजनों को (अनेक कार्यों द्वारा) जोड़ने वाले हैं।

बोधोत्सवः प्रतिवर्ष, आर्याणां च महोत्सवः।
पठनं पाठनं नित्यं, संस्कृत, वेद, रक्षणम्॥

भावार्थ-महर्षि दयानन्द सरस्वती का शिवरात्रि बोधोत्सव प्रतिवर्ष टंकारा में आर्यो के भव्य महोत्सव के रूप में आयोजित होता है। (इस स्थान पर ब्रह्मचारीगण श्रद्धा से गुरुजनों के साथ) प्रतिदिन पठन-पाठन करके संस्कृत और वेद की रक्षा कर रहें हैं।

गोसेवा ननु गोरक्षा, गावो भवन्ति मातरः।
गोदुग्धं गोघृतं चैव, गोभक्तिः दृश्यते सदा॥

भावार्थ-(महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुस्तक 'गोकरूणानिधि' के अनुसार) इस टंकारा में गायों की सेवा और गोमाता की रक्षा हो रही है। गायें, हमारी माता हैं। यहां पर गाय का दूध और घी होता है। गोभक्ति यहां दिखाई देती है।

आर्यवीरदल यस्य, रूचि जाता हि शैशवे।
गुरुकुले रावलेऽत्र, आत्मानन्द-संचालिते॥

भावार्थ- जिस (श्री रामाथ सहगल की) बचपन में आर्यवीर दल में रूचि उत्पन्न हुई। यहाँ स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा संचालित गुरुकुल रावल में (अनेक कार्यो में भाग लिया था)।

बस्ती-हरफूल-सिंह, दिल्ल्यां सदरबाजारे।
मन्दिर-मार्गे हि नूनं, कर्मव्याप्तिः संदृश्यते॥

भावार्थ-दिल्ली सदरबाजार के निकट आर्यसमाज मन्दिर बस्तीहरफूल सिंह और अनारकली मन्दिरमार्ग में आपके कर्मो की व्यापकता दिखाई देती है।

केन्द्रीय सभायामस्यां, प्रादेशिकसभायां हि।
मन्त्रिपदं समवाप्य, कार्यं तैः नितरां कृतम्॥

भावार्थ-इस केन्द्रीय सभा और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में मन्त्री पद को प्राप्त करके, उन्होंने आर्यसमाज का बहुत काम किया।

नवसंख्या पूर्णाजाता, नवतिस्तु जन्मोत्सवः।
दशसंख्या मन्यतेऽद्य, मम पूर्णा गतिः भवेत्॥

भावार्थ-(श्रीरामनाथ सहगल के 90वां जन्मदिवस होने पर) नौ की संख्या पूर्ण (9x10=90) हो गई है। इस शुभ अवसर पर दश की संख्या आज यह मानती है कि मेरी गति भी (10x10=100) पूर्ण हो। अर्थात् श्री रामनाथ जी सहगल सौ वर्ष के हों।

सिंहनादः रामनाथः कर्मनिष्ठो धर्मशीलः।
दया-सेवा-समापन्नः, पूर्णायुः जीवतु चिरम्॥

भावार्थ-(आर्य महासम्मेलनों आदि महोत्सवों में) सिंह समान गर्जना करने वाले आर्यनेता श्री रामनाथ सहगल कर्मनिष्ठ, धर्मशील और दया एवं सेवा में संलग्न आप पूर्णायु पर्यन्त जीवन यापन करें।

- जी.एच.8/164, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110087

(पृष्ठ 2 का शेष)

मात्र है और एक सर्वोच्च सत्ता है। द्वितीय सत्र का प्रारम्भ वैज्ञानिक पक्ष के साथ हुआ। इसका प्रस्तुतीकरण जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के जीवन विज्ञान (Life Sciences) के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. पी.के. यादव ने किया। उन्होंने अत्यन्त विनम्रता के साथ विज्ञान का पक्ष रखते हुए कहा कि विज्ञान की अब तक की गयी शोध-प्रक्रिया में परमाणु की प्रेरक शक्ति तक पहुंच हो चुकी है, परन्तु 'वह प्रेरक शक्ति क्या है?' वैज्ञानिक अभी तक इसे जान नहीं पाये हैं। इतना अवश्य है कि यह एक विलक्षण शक्ति ही है। यद्यपि स्पष्ट रूप में यह तो नहीं कहा गया कि वह शक्ति ईश्वर ही है। डॉ. यादव का कहना था कि अभी तक 'ईश्वर' नामक शक्ति को किसी भी उच्चकोटि के वैज्ञानिक ने अस्वीकार नहीं किया है। डॉ. यादव ने वैज्ञानिक शब्दावली को बहुत ही सरल शब्दों मं प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

इस गोष्ठी के सर्वाधिक प्रभावशाली व तर्क सम्मत पक्ष के प्रस्तुत कर्त्ता अन्तिम वक्ता डॉ. वागीश आचार्य जी थे जो आर्ष गुरुकुल एटा के प्राचार्य है। आचार्य जी ने वैदिक चिन्तन को प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम इस सर्वमान्य सिद्धान्त की स्थापना की कि जहाँ भी नियम होता है, वहां उसका नियामक अवश्य होगा। इसी प्रकार, जहां व्यवस्था है, वहां उसका व्यवस्थापक भी अवश्य होना चाहिए। इस आधार पर उन्होंने अनेक उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि जितने सुन्दर नियमों और व्यवस्था से यह संसार चल रहा है वह किसी नियामक व व्यवस्थापक के बिना सम्भव नहीं हो सकता। इस नियोजक और व्यवस्थापक को ईश्वर नाम से जाना जाता है।

इस गोष्ठी की अध्यक्ष डॉ. शशि प्रभा कुमार ने सभी विद्वानों के प्रस्तुत विषय की समीक्षा करते हुए कहा कि किसी भी विद्वान ने ईश्वर के अस्तित्व के नकारा नहीं। स्पष्टतः यह सिद्ध ही है कि ईश्वर तो है परन्तु उसके स्वरूप के विषय में सबके अलग-अलग मत है। अतः अगली गोष्ठी ईश्वर के स्परूप पर होनी चाहिए। अन्त में इस गोष्ठी की रूपरेखा एवं योजना के सूत्रधार श्री राजीव चौधरी ने गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक चौहान, आमन्त्रित गणमान्य अतिथियों और विषय प्रस्तुतकर्ता विद्वानों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर विभिन्न संगठनों से सम्बधित श्री आनन्द चौहान, श्री रजनीश गोयनका, श्री नीरज मुंजाल, श्री योगराज अरोड़ा, श्री इन्द्र सैन साहनी, श्री नितिन्जय चौधरी, श्रीमती बाला चौधरी, श्री डी.डी. अग्रवाल, श्री एल.आर. अग्रवाल, श्री सुरेश गुप्ता, डॉ. मधु गुप्ता आदि ने अपनी उपस्थिति एवं सहयोग से इस आयोजन की शोभा बढ़ाई वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष)

होता। शायद इसीलिए तीसरे मन्त्र में मन को बुद्धि (Intellect) का उत्पादक और स्मृति (चित्त-Memory) का साधन मान उसे धैर्यवान और प्राणिमात्र में अन्धकार का नाश कर प्रकाश बिखेरने वाला कहा गया है। इतना ही नहीं जिस मन की शक्ति के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं हो पाता-ऐसा मेरा मन शुद्ध विचार और संकल्प वाला हो, यही प्रार्थना की गई है।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ -यजु.: 34/4

यह अविवादित सत्य है कि मनुष्य का पंचभौतिक शरीर नाशवान है परन्तु वाह रे मन! तू तो सदा अविनाशी है। भूत, वर्तमान, भविष्य की परिकल्पना तू करता है और तेरे ही आदेश से मनुष्य की सभी ज्ञानेन्द्रियाँ मानव-जीवन को संचालित करती हैं-ऐसा मेरा मन यदि उत्तम सोच वाला बन सके तो-'सोने पे सुहागा' वाली कहावत चरितार्थ होगी।

मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्॥

मन ही मनुष्य के (Bondage) अथवा मोक्ष (Salvation) का कारण होता है यह सर्व विदित है। यदि मन इन्द्रिय-जनित विषयों में आसक्त रहता है तो वह बन्धन का कारण होगा और यदि इ के चक्रव्यूह के बाहर रहेगा तो मोक्ष का कारण बनेगा।

पाँचवें मन्त्र में तो ऋषि ने मन में ही चारों वेदों के ज्ञान-विज्ञान, कर्म और भक्ति का समावेश करते हुए यहाँ तक कह दिया कि जिसमें प्राणियों का समस्त ज्ञान, सूत्र (धागे) में मणियों के समान पिरोया गया है, ऐसा मेरा मन वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रचार का शुद्ध संकल्प लेने वाला हो। ध्यान रहे कि आर्य समाज का तीसरा नियम है 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है (Vedas are the Scriptures of true knowledge)।

इस महत्वपूर्ण विषय से सम्बन्धित यजुर्वेद के 34वें अध्याय के छटे मन्त्र को उद्धत करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता क्योंकि इसमें एक सटीक उपमा देकर मन की स्थिति का वर्णन किया गया है:

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

यहाँ मन को शरीर रूपी रथ का एक कुशल सारथि और इन्द्रियों को रथ के घोड़े माना गया है। अच्छा सारथि जिस प्रकार लगामों से वेगवान घोड़ों को बलात् हाँक ले जाता है, उस प्रकार जो मन मनुष्यों को इतस्ततः विचार-क्षेत्र में ले जाता है, जो 'हृत्प्रतिष्ठम्' अर्थात् हृदय में स्थित (मन शरीर में कहाँ रह सकता है, थोड़ा संकेत यहाँ दिया गया है) और कभी बूढ़ा न होने वाला और अत्यन्त वेगवान है, वह मेरा मन सर्वप्रकारेण कल्याणकारी संकल्प (इरादे) वाला हो।

मन की चंगाई के बारे में भी एक कहावत प्रसिद्ध है- **'मन चंगा ते कठौती विच गंगा'**- यदि मन पवित्र है तो घर में रखे मटके का पानी भी गंगा के पानी जैसा पवित्र होगा। लेकिन मन कभी-कभी खुराफाती भी बन जाता है जिससे हानि की सम्भावना हो जाती है। महाकवि सूरदास ने तो मन की तुलना पक्षी से ही कर दी। उनकी गोपिका के लिए तो:

मेरो मन अनत कहाँ सचु पावे।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवे॥

उपरोक्त छः मन्त्रों में मन को वायु से भी अति वेगवान, कभी बूढ़ा न होने वाला, एक कुशल सारथि और मानव-शरीर का पूर्णरूपेण स्वामी कहा गया है। मेरी दृष्टि में इन मन्त्रों में मन के सकारात्मक रूप की ही चर्चा की गई है। लेकिन प्रार्थना तो एक ही की जाती है कि मेरे मन से सर्वदा कल्याणकारी विचार ही निस्सृत हों।

ऊपर जिन इन्द्रियों की ओर संकेत किया गया है वे दस हैं- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। मन इन सभी के मध्य संयोजक और नियामक का काम करता है। इसीलिए मन को उभयात्मक (दोनों प्रकार की) इन्द्रिय भी माना जाता है यद्यपि वह दिखाई नहीं देता।

यह सत्य है कि 'शरीरं व्याधि मन्दिरं' अर्थात् मानव-शरीर बीमारियों का घर है परन्तु शरीर से ज्यादा पहले मन को ठीक करने की आवश्यकता है और यदि मन स्वस्थ होगा तो शरीर धीरे-धीरे अपने आप स्वस्थ होने लगेगा क्योंकि A healthy mind live in healthy body.

बस जैसे ही इस स्थिति की प्राप्ति होती है सन्त कबीर का वह दोहा स्मरण हो आता है:

कबिरा मन निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर॥

आइए! 'शिवसंकल्प' के लिए ही सही, 'मन' को यही आदेश दें कि हे 'मन' तुम 'नम' बन कर नम्रता और नमन के प्रतीक बन जाओ जिससे मनुष्य मात्र का कल्याण हो सके।

तन-मन पर नियंत्रण जिस दिन हो जाएगा।
जीवन तुम्हारा धन्य उस दिन हो जाएगा।

- वरेण्यम्, ए-1055, सुशान्त लोक-1, गुरुग्राम-122009 (हरियाणा)

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां प्रतिवर्ष कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते है कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मियता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते है। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते है। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

ऋग्वेद ॥ ओ३म् ॥ यजुर्वेद

मातुश्री हिराबेन हंसराज हरजी पटेल

वैदिक प्रचार-प्रसार सम्मान

आर्यरत्न श्री रामनाथ सहगल

की सेवा में श्रद्धाया समर्पित

प्रवर्तकः आर्य समाज भुज (कच्छ)

27.02.2014

अभिनन्दन पत्र

आपका जन्म 13 मार्च, 1925 को सरगोधा जिले में राजियावाला ग्राम के आर्य परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा गांव के ही एक एंग्लो, संस्कृत विद्यालय में हुई। दसवीं कक्षा की परीक्षा पास करने के बाद आपको पंजाब नेशनल बैंक, रावलपिंडी में नौकरी मिली, वहां आप आर्य समाज में अग्रणी श्रीकिशोरीलाल जी के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से आपने आर्यसमाज मंदिर में जाना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही आप आर्यवीर दल के नगर नायक बन गये, आर्यवीर दल के माध्यम से सेवाकार्य और युवकों को राष्ट्रभक्ति सिखाने हेतु जगह-जगह पर अनेक शिविरों का संचालन किया। आपको सर्वप्रथम, गुरुकुल रावल के शिविर में स्वामी आत्मानन्दजी ने शिविर का संयोजक बनाया। उसके बाद आज पर्यन्त आर्यवीर दल, आर्यसमाज, प्रान्तीय, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन या शताब्दी महोत्सव सभी आयोजनों में आपको संयोजक बनाया जाता है और आप दिन-रात कड़ी मेहनत कर प्रत्येक समारोह को ऐतिहासिक रूप प्रदान कर देते है।

देश जब विभाजन की ओर जा रहा था और स्थान-स्थान पर हिंदु-मुस्लिम दंगे हो रहे थे, तब आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के विद्वान प्रचारक, महात्मा खुशहालचन्दजी ने हिन्दुओं की रक्षा और सेवा करने हेतु रावलपिंडी में एक राहत शिविर लगाया और आपको उसका संयोजक बनाया। बैंक में कार्यरत होते हुए भी आपने उस जिम्मेवारी को स्वीकार किया और अपार निष्ठा एवं श्रद्धा से उसका निर्वहन करते हुए आप अधिकतम समय शिविर में रहकर सेवाकार्य करते रहे। उस शिविर में हिन्दु महासभा के कैप्टन केशवचन्द्र सहायता कार्य के लिए पधारे तो उन्होंने आपकी कड़ी मेहनत, निष्ठा, लगन और सेवाभाव को देखा। संयोगवश कैप्टन केशवचन्द्र उस समय पंजाब नेशनल बैंक के निर्देशक थे, उन्होंने बैंक को आपके कार्य के बारे में लिखा, जिससे प्रभावित होकर आपको एक माह का वेतन बैंक द्वारा पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया गया। आपका यह प्रथम पुरस्कार था।

आपका समस्त जीवन आर्यसमाज को समर्पित रहा है। आप डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव हैं और साथ ही अनेक गुरुकुलों का संचालन भी करते हैं। आर्यसमाज की विभिन्न संस्थाओं में आपको प्रतिनिधित्व दिया जाता है। आपने परोपकारिणी सभा के माध्यम से महर्षि दयानन्दजी के साहित्य के प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य किया है। सालों से उपेक्षित रहे महर्षि दयानन्द जी के जन्म स्थल-टंकारा को, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के माध्यम से, उसके अधिकार में लाकर उसको विश्व दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित करने का अद्भुत एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। आप हिन्दु शुद्धि-सभा के माध्यम से हिन्दु धर्म की सेवा करते रहे है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान शताब्दी वर्ष के अवसर पर आपने स्वयं उत्तरादायित्व स्वीकार करते हुए, महर्षि बलिदान स्थल-अजमेर में एक ऐतिहासिक व सफल समारोह का आयोजन किया, जिसे देखकर देश-विदेश के पत्रकार प्रभावित हुए। आप प्रसन्न चेहरा, मधुरवाणी, उन्नत ललाट, दीर्घदृष्टि और बेनमून व्यवस्थापन क्षमता के धनी है साथ ही आप में प्रचुर सेवाभाव, सत्यनिष्ठा और आर्यसमाज के प्रति अनन्य लगन के दर्शन होते है। आपकी प्रतिभा से युवाओं को प्रेरणा मिलती है और आपको सबका सहयोग प्राप्त होता है। इन सब सद्गुणों की वजह से आपने आगरा, मथुरा, दिल्ली, बम्बई, लन्दन, न्यूयोर्क, नेपाल आदि स्थलों पर हुए भव्य और सफल आर्य महासम्मेलनों में आपकी संगठन क्षमता का परिचय दिया है।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलेशजी, बेटी मंजू एवं पुत्र श्री अजय सहगल आपके कार्य में सदैव सहयोग करते रहे है, ऐसे आपका पूरा परिवार आर्यसमाज की विचारधारा और उसके माध्यम से हो रहे सेवाकार्य को समर्पित है।

कच्छ और सौराष्ट्र में आपने आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। महर्षि दयानन्दजी के जन्म स्थल-टंकारा में स्थापित गुरुकुल के संचालन और उसकी प्रगति का पूरा श्रेय आपको जाता है। आप इस प्रदेश में भूकम्प, बाढ़ या कोई भी आपत्ति के समय में सेवायज्ञ करते हैं और उत्कृष्ठ व्यवस्थापन से पिडीतो की भारी सहायता करते हैं।

आपको यह सम्मान प्रदान करते हुए हम गौरवान्वित अनुभव करते हैं और परम् पिता परमात्मा से आपके स्वास्थ्य और दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं।

हम है आपके प्रति विनयानवत और श्रद्धानवत

डॉ. वी.एच. पटेल	महेशभाई वेलाणी	डॉ. योगेशभाई वेलाणी
प्रधान	मन्त्री	मे. ट्रस्टी

सामवेद **एवं आर्यसमाज-भुज के सभी सदस्यगण** अथर्ववेद

जिन्दगी हर हाल में ढलती है,
जैसे रेत मुट्ठी से फिसलती है,
गिले शिकवे कितने भी हों,
हर हाल में हंसते रहना क्योंकि....
जिन्दगी ठोकरों से ही संभलती है।

टंकारा समाचार मई, 2014
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-5-2014
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.04.2014

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय